यशवंती निराधार
धाम पहला

बाणी

हुजूर महाराज दर्शन दास जी

यशवंती निराधार

धाम पहला

बाणी

हुजूर महाराज दर्शन दास जी

© सर्वाधिकार सुरक्षित

यशवंती निराधार धाम पहला
बाणी हुजूर महाराज दर्शन दास जी
प्रथम संसकरण : फरवरी 2014

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक:
सचखण्ड नानक धाम,
इन्द्रापुरी लोनी रोड, जिला गाज़ियाबाद

धन
नानक

भूमिका

हुजूर महाराज दर्शन दास जी द्वारा यशवंती निराधार की रचना, प्रभु की महिमा व प्रशंसा का वर्णन है, भक्ति, प्रेम, दया व करुणा का प्रतीक है जोकि प्रभ अबिनाशी से संसार की ओर आ रही है। उस करुणा, भक्ति, प्रेम का वर्णन हुजूर महाराज जी ने एक दास बन कर, सेवक बन कर अपने प्रभु की खूबियों का और प्रभु से जो जो शक्तियाँ हुजूर को प्राप्त हुई उनका ज़िक्र हुजूर महाराज जी ने अपनी बाणी द्वारा हम सबको समझाया। यशवंती निराधार का पहला शब्द है यशवंती - अर्थात् यश से परिपूर्ण स्त्री स्वरूप आत्मा ने पति स्वरूप परमात्मा का यश, महिमा, प्रशंसा, उपमा को शब्दों में सजाया है, दैविय शक्ति का पूर्ण विस्तार से वर्णन किया है।

इसका अगला शब्द है निराधार। सांसारिक तौर पर यदि किसी चीज़ का खण्डन करना हो तो हम उसके लिये यह शब्द प्रयोग करते हैं। सद्गुरु ने अपने श्रीमुख से निकली हुई ईश्वरीय स्तुति को विनती का रूप देते हुए यह बताया है कि प्रभ अबिनाशी की उपमा हम चाहे जितनी भी कर लें परन्तु शाब्दिक तौर पर यह असम्भव है। प्रभ अबिनाशी की उपमा

बोलकर या लिख कर की ही नहीं जा सकती। प्रभ अबिनाशी बहुत बड़ा है और हम सांसारिक जीव बहुत ही छोटे हैं। सारी शब्दावली का सहारा लेकर भी हम प्रभ अबिनाशी के बारे में समझा नहीं सकते क्योंकि शब्दों की अपनी एक सीमा है और प्रभ अबिनाशी सब सीमाओं से परे है। सारे शब्द समाप्त हो जायेंगे परन्तु उसकी उपमा समाप्त नहीं हो सकती। इसीलिये गुरुदेव ने बाणी के साथ निराधार शब्द लगाकर खण्डन भी किया है कि उस प्रभु की महिमा इतनी अपार है कि मैं अपनी बाणी के द्वारा उसका महिमा मण्डन नहीं कर सकता। अपनी बाणी को सद्‌गुरुदेव ने यशवंती निराधार की संज्ञा देकर स्वयं को निर्बल ही प्रमाणित किया है। गुरु साहिब ने तो अरजोई में भी कहा है ''मैं नीच तेरे दास को दासा।'' अर्थात् गुरुदेव ने स्वयं को नीच की संज्ञा दी है और स्वयं को दासों का दास कहा है। इसके साथ ही आपने अपने सेवादारों को हाथ पीछे करके खड़े होने का आदेश देकर नम्रता का मार्ग दर्शाया है।

इसी प्रकार हुजूर महाराज जी ने बाणी को यशवंती निराधार नाम देकर यह प्रत्यक्ष किया है कि हे दाता! तुम्हारा यह जो पूरा ब्रह्माण्ड है, सृष्टि है वह इतनी बड़ी है, तुम्हारी

गाथा इतनी बड़ी है कि मैं अपने शब्दों के द्वारा उसकी उपमा नहीं कर सकता, तुम्हारे यश के आगे मेरे शब्द निराधार हैं। इस प्रकार गुरुदेव ने बहुत ही नम्रता से अपने शब्दों को ''यशवंती निराधार'' का स्वरूप प्रदान किया और ईश्वरीय सत्ता के आदेश को नम्रता से स्वीकार किया और हमें अपनी बाणी के द्वारा परम पिता परमात्मा, प्रभ अबिनाशी के साथ जोड़ने का मार्ग दर्शाया।

''यशवंती निराधार'' दास धर्म का निजी ग्रंथ है जिस में हुजूर महाराज जी ने बाणी को तीन अवस्थाओं में विभाजित किया है। पहली अवस्था है आदिमणी, दूसरी है पँचमणी और तीसरी है चिन्तामणी। हुजूर ने जितनी भी ईश्वर की, ईश्वर के देवी देवताओं की, ईश्वरीय अवतारों की, पीर पैगम्बरों की प्रशंसा की है वह सारी बाणी आदिमणी में दर्ज है। दूसरी अवस्था है पँचमणी। हुजूर ने जो ईश्वर के समक्ष संसार के लिये, जन कल्याण के लिये, अपनी हस्ती को उसमें विलीन करने के लिये विनतियां की हैं वह सारे शब्द पँचमणी में दर्ज हैं। तीसरी अवस्था में हुजूर महाराज जी ने वह शब्द दर्ज किये हैं जिस में सांसारिक जीवों को इस धरती पर अपने जन्म के मनोरथ को पहचान कर, ईश्वरीय मार्ग पर चलने की,

धन
नानक

ईश्वरीय मार्ग पर चलते हुये सांसारिक तौर पर अपना दायित्व निभाने की तरकीबें बताई हैं ताकि हमारा जीवन अच्छा हो सके, सुखदायक हो सके और हम संसार में रहकर, ईश्वरीय मार्ग पर चलकर ईश्वर की दैवीय स्वरूप के दर्शन प्राप्त कर सकें।

प्रत्येक शब्द के प्रारम्भ में हुजूर महाराज जी ने ''धन नानक'' दर्ज किया है। हुजूर महाराज जी ने परम श्रद्धेय गुरु नानक देव जी महाराज को अपने गुरुदेव के रूप में माना है इसलिये प्रत्येक शब्द से पहले आपने अपने अराध्य का नाम लिया है और उसके बाद शब्द का उच्चारण किया है क्योंकि प्रथम स्थान पर गुरू और फिर ईश्वर की पूजा का विधान है।

हर शब्द के सम्पूर्ण होने पर हुजूर महाराज जी ने ''यकीन'' शब्द लगाकर अपने पूर्ण विश्वास का प्रमाण दिया है ताकि हम जिज्ञासु जीव भी हुजूर महाराज की तरह ही बाणी पढ़ते, सुनते, जपते हुए उतना ही भरोसा धारण कर सकें। हालांकि यह भरपूर प्रयास किया गया है कि बाणी को संकलित करते समय शाब्दिक तौर पर कोई त्रुटि न रहे परन्तु यदि फिर भी कोई त्रुटि रह गई हो तो हम क्षमाप्रार्थी हैं।

महाराज त्रिलोचन दर्शन दास जी

धन
नानक

अनुक्रमणिका

(अ)

अब मुझ से रहा ना जाये 258
अठसठि तीरथ का वरदान 26
अमावस इश्नान उत्तम भयो 27
आ अल्ला आ राम आता है 28
आ मिल राम पिआरे 65
आतमिक गिआन करम नही कोये 186
आण पड़े जो तेरी शरणी 187
अलख नारायण निरंजन मेरे राम 29
अंतर की बिध जानो नाही 66
अभिमान तिआगो भाई 183
अवर किआ लोचे लोच प्रभ दर्शन 259
अवर नाही तुध जेहा कोई दाना 185
अमृत पीओ जुग जुग जीओ 30
अमृतधारा बरसै मनवा 31
अमृत नाम सिमर मन मेरे 32
अखां दा तकणा काम दी है भावना 33
आपे आपणे आप काज सवारे 34

(इ)

इक्को दाता इक्को उम्मत 36
इक्को मिट्टी दे बणे इनसान 184

(उ)

उत्तम नाम तुमारा माधो 25
उडण पंखेरू बिन राहीं 257

(ए)

एको ओट तुमारी दाता 188

एको संग सुहागण जोती जोत समाये	178
एको सभना दा दाता	35
एक ऊपर ओंकार सजाया	37
एक ओंकार राओंकार	38
एक घड़ी साध संग	39
एक नूर ते नूरे इलाही	189
(क)	
कर किरपा प्रभ किरपा निधान	64
करते पुरख सखी सगल सहेली	65
करन करावन करता आया	66
करम करीम सेव कमावां	67
करम भूल कूड़ कमांदे	269
किन कारण तूँ जग में आया	272
किरपा करो दर्शन गुण गावै	61
किरपा करो दीन दयाल	68
किरपा करो प्रभ किरपाल	273
किरपा करो मोहे दरस दीजे	206
किरपा करो मेरे ठाकुर सांई	69
किरपा निधान किरपा करो जन आपने	70
किरपाल किरपा निधान करमयोगी	207
काहे रे मन की डगरिया डोले	270
काज सवारे भगत जनो के	205
कालिंगा गुणी गणेष सारंग नाभी	71
काली कालिंगा काया कलप	72
कंत कामन मेरा सोहणा सुंदर राम	204
कैसे करूँ तेरी मैं आराधना	274
(ख)	
खतरा	271
(ग)	
गंगा जमना सरसवती देओ एह वरदान	71
गंभीर गोसांई गुणिआर बिधाते	73

धन
नानक

गुर संग प्रीत जो जन करे	207
गुर पारब्रह्म परमेशर दीओ नाम	75
गुर पूरा वडभागी पावां	76
गुर पूरे हउँ जाऊँ कुरबान	77
गुरबाणी गुड़ मीठी लागी	78
गुरू सतिगुरू भेद नाही कोये	79
गुरू नानक सभहां तों वड्डा	80
गुरू नानक तेरी वडियाई	81
गुरू नानक दा जपीये नाम पहलां	82
गुरू नानक मेरे होये सहाई	83
गुरू प्राण पंथ पूरा	84
गुरू प्रेम सभ से निआरा	85
गुरू प्रेम रखणा गुरू हुकम माहि	86
गुरू पूरे मेरे ठाकुर नारायण	87
गुर पूरे मेरे पिता दशमेश	88
गुरू बिन संग ना को तेरा	83
गुरू बिन नाही कोई सहारा	74
(घ)	
घट घट वासी प्रभ अबिनासी अजब	208
घट घट वासी प्रभ अबिनासी बख्शो	209
(च)	
चतरभुजा चौमुंडा देओ हरि राय	89
चरण प्रीत मोहे दीजै	275
चवर छतर लेओ बैठिआ ठाकुर	90
चारमुखी दीवा चारे धरम कहाये	92
चिंता चित्त ना आवे	277
चिट्टी काली चमड़ी	276
चौथी लावें पती पत सेवा	179
(छ)	
छोड़ मन मोह ममता सतिगुर शरन धार	91

धन
नानक

(ज)

जग जीवन दाता मिले संजोगी	210
जगत खेल मन ना लगसे	211
जगत जलंदा राख लओ	93
जन्नत ए जान गुरू गोबिंद सिंघ	95
जनम दीओ संग दीओ गुजरान	212
जब जब होसी अरिषट अपारा	97
जन दर्शन प्रभ सुणो बेनंतीआं	90
जल थल गगन तेरा पसारा	98
जिस हरि नाम मन भाये	97
जिसे देखा सो दुखी हरि नाम	276
जिसने खोजा उसने पाया	213
जित देखूँ मैं तुध पाऊँ	278
जिनहे मन हरि नाम वसे	93
जो जन करे सेवन मदिरा मास	279

(त)

तन मन धन तुध आगे पिआरे	214
तरस भया सतिगुर को हरि नाम दीओ	215
तक्क के तेरी महिमा दाता लोचदा	257
त्रेता राम अवतार धारे	99
तिस सतिगुर महि जाऊँ बलिहार	100
तुझसे बिछुड़े गोबिंद ठाकुर	101
तुझ बिन जिंद जुदाईआं	281
तुझ बिन दुख घनेरे सहने	216
तुझ बिन प्रेम ना उपजे	282
तुझ बिन मन लोचदा हरि राय	282
तुम पातशाहों का पातशाह	103
तुम दान देओ हरि भगतन को	215
तुम मेरो साहिब ऊच महान	104
तुम मेरो गोबिंद ठाकुर दातार	217

धन नानक

तुम मेरो प्रीतम प्रभ किरपाल	105
तुम मेरे ठाकुर राम रघुराई	283
तूँ अल्ला तूँ राम रहीम	106
तूँ सखी तूँ सखा	107
तूँ सभनी थांई जित्थे हउँ जांई	108
तूँ सभनी थांई तुझ देखे मन मान	218
तूँ साजन तूँ हरि प्रभ पूरा	220
तूँ साहिब मैं तुमरो दासा	219
तूँ सांई दीन दयाला	109
तूँ ही तूँ मन हर वेले बोले	231
तूँ ही मेरा सजन पिआरा	221
तूँ जाने तुझ तांही मानै	284
तूँ दाता तूँ अंतरयामी	206
तूँ देंदा आया देवणहार	110
तूँ दाता पालणहारा	223
तूँ पातशाहों का पातशाह	224
तूँ बेअंत बख्शंद बख्शणहार बाबा	110
तूँ महाराणी जग कलियाणी	111
तूँ मेरा बंधप तूँ मेरा सुआमी	107
तूँ माई तिंन पूत जाई	113
तूँ मेरा ठाकुर गोबिंद गोसांई	114
तूँ मेरा रंग रंगीला साजन	118
तूँ मेरे ठाकुर ठाकुर गोसांई	286
तूँ ठाकुर मात पिता हमारे	222
तूँ वड्डा तेरा नांओ वड्डा	115
तृष्णा मिटे मेरे मन तन की	280
तीजी लावैं दुख सुख सांझा	178
तेरा कीरतन कीरती	116
तेरा नाम हरी हरि पूरा	117
तेरा नाम प्राण अधारा	225

तेरी महिमा बेदां तहि नाही जाणै	118
तेरी कुदरत तेरी जन्नत	112
तेरे आशिकां दे इश्क अव्वले ने	288
तेरे सहारे मेरे राज दुलारे	226
तेरे गोसांई राम रहीम करता	119
तेरे तोल तराजी तों लैके	288
तेरे भरे भंडारे लाल जीओ	120
त्रै नारी तिनहे आदि कुआरी	121
तैंह हरि नाम जपेओ	227
(द)	
दया सति संतोख नाम चारे धरम	122
दयावंत दयाल पुरख खसम हमारे	228
दरश देओ मेरे राम जीओ	124
दर्शन की लागी पिआस	201
दर्शन कहत शब्द चित्त लावां	60
दर्शन राम तेरे काज सवारे	42
दाढ़ीआं रखण केस सजावण	289
दास जनो को प्रभ भयो दयाल	229
देओ दान नाम आपने दासन को	125
देओ मीत सजन मेरे रामा	98
दीओ मोहे नाम दान	126
दीजो दरस माहे मेरे ठाकुर जीओ	290
दीन के दाता गरीबों के वाली	231
दीन दयाल सतिगुर पुरख हमारे	127
दीन दयाल राम प्रभ शाम अबिनासी	128
दूजी लावैं तन मन धन संग	177
(ध)	
धन निरंकार जो करे सो करतार	129
धन शिव त्रिलोकी नाथा	130
धुरों त्रिलोकी तरशूले	131

(न)

नमो गणेश नमो गणेश	132
ना चितारे अवगुण हमारे	232
नदर करो मेरे प्रीतम पिआरे	291
नानक सच है नानक है भी सच	133
नानक ना+न+क	134
नानक नाम अमोलक रतन	136
नानक नाम सिमरो संतो	137
नानक भयो किरपाल	138
नाम सिमर दुख कट्टे जाण	285
नाम की दात मिले गुर शरणी	137
नाम की महिमा अपरम्पार	139
नाम जपत मन भयो निहाल	139
निओटेओं का आसरा	140
निस दिन जपीये प्रभ का नाम	141
नित्त दिन याद करेसां मेरे साहिबा	286
नित्त निमाणी करे अरजोई	292
नीलकंठ नारायण निरंजन निमाणा	142
नैण निराकार निरंजन नारायण सुआमी	143
नैन नैनण नैननण	144
नंद गोपाल ठाकुर दातार	145

(प)

पहले घर तो इक सजाया	146
पहली लांव प्रभ पढ़ेओ	176
पतित पावन प्रीतम गोसांई	234
प्रभ सुखदाई सतिगुर दयाल	237
प्रभ जीओ मैं आयो शरण तुमारी	238
प्रभ जीओ मोहे नाम दीजो	293
प्रभ जीओ मन चाओ लागा है	147
प्रभ दरगाहे संत की सोभा	57

धन
नानक

पँच सा पे सतिगुर सेवा 233
पँच सा पे जाऊँ कुरबान 234
पँच तन कीओ परधाना 235
पँचम बसत पँच विकार 236
पीड़ पतित पावन प्रितपाल 239

(फ)

फिरत फिरत दर दरवज्जे 287

(ब)

बहुमुल्ला रे भाई 266
बनवारी बनवासी राम शाम गोबिंदा 148
बलबावन बलराम गुसईआं 294
बारां माहा 149
बंधन मुक्त हरि दर्शन कओ 240
बिन हरि भजन रंग रस जेते 292
बिन मांगे सभ किछ दीओ 241
बे-डर बे-वैरी 154

(भ)

भगत कमाई ठाकुर तुध ते पाई 155
भगति कमाई गुर तुझ ते पाई 156
भज मन बावरे भज मन नाम 26
भरोसा रख गुरू आपणे ते 157
भले चंगे प्रितपाल ठाकुर जीओ 158
भाई रे काहे रे मन डोले 295

(म)

महादेव गुरू ब्रह्मा विशनूँ 159
मन तूँ काहे करे चतुराई 297
मन में पिआस नित्त सतावे 300
मनमुख उपजे पँच विकारा 298
मनमुख मन होवे परधान 299
मानस जनम पाया है तो 242
मेहरबान मेहरबान मेहरबान 161

धन नानक

मिठ्ठत मीठे मनमोहन पिआरे	301
मिठ बोलड़ा हरि हरि हरि हरि साजन	160
मिठ बोलड़ा तूँ साजन पिआरा	243
मिल मेरे ठाकुर राम रघुराई	302
मुकटधार गिरधारी मुरारी	162
मुझ महि तुझ महि भेद नाही	163
मेघ बरस मेघराज मेरे	244
मेरा साजनड़ा हरि साजनड़ा	245
मेरा गोबिंद सुंदर मैं खड़ी निमाणी	164
मेरा मन तृप्त अघाई	246
मेरा माण भी तूँ मेरा ताण भी तूँ	165
मेरा माण भी तूँ (माण ताण)	247
मेरे सतिगुरू सभना टेक तुमारी	166
मेरे सतिगुर किरपा कीजै	248
मेरे साजन सोहणे सुहेलड़े	167
मेरे गुरू गंभीर गुणिआर बिधाते	249
मेरे पीआ वसे परदेस सखी	303
मेरे मन हरि प्रीत कर ऐसी	249
मेरे मीत पतित पावन सुख सागर	304
मेरे पतित पावन पीआ मन भाये	250
मेरे ठाकुर गोबिंद राम जीओ	167
मेरे ठाकुर भयो किरपाल जीओ	168
मेरे ठाकुर ठाठ रचाया	177
मेरे ठाकुर राम गोपाल	169
मेरे रामा मेरे कृष्णा	170
मेरो राम रमईया तेरा अंत ना जाणा	172
मैं सिम्बल दा रुख वे सजणा	305
मैं गरीब दास तुमारा	251
मैं तां जाणा एको दाता	306
मैं तेरे गुण गावां	173

मैं तुध प्रीत लगाई	227
मैं निमाणी करमहीन	307
मैं निमाणी करां अरजोई	308
मैं निमाणी माण करेसां	309
मैं मूरख की गत नहीं कोई	311
मोहे आपणा नाम देओ	252
मोहे दर्शन की पिआस रे	274
मक्के हज्ज गुजारन मोमन	312
(र)	
राख लेओ राखनहार सुआमी	127
राजे राज कमांवदे	314
राम सिमर मन मेरे शब्द अघाई	253
राम नाम की महिमा निआरी	56
राम भज मन बावरे	315
रामा तुध बिन ना को सहाई	316
रे मन अनहद शब्द पछाण	174
रखण रोजे मनावण ईदां	313
(ल)	
लाल दीजै हरि नाम दातारै	175
लाल रंगीले प्रितपाल हरि राय	191
लावां (सहकार)	176
लोगन की है बात निराली	317
लोचदा ए मन मेरा	257
(व)	
विसरै ना मन प्रीत तुमारी	180
(स)	
सहज सुख सुनेदड़े सतिगुर	40
सगल धरत तुमारी राम जीओ	42
सजन सुंदर मनमोहणे नूँ	260
सति नारायण सति सिंगारी	43

धन
नानक

सतिगुर आप दयाल भयो	190
सतिगुर साजन सनेंदड़ेआ	191
सतिगुर सेवा सिख कमावै	44
सतिगुर सेवा मिले वडभागी	192
सतिगुर सोभा जग से निआरी	45
सतिगुर करे सतिगुर करो	193
सतिगुर गुरू गिआन दीआ	46
सतिगुर पूरन पुरख हमारे	194
सतिगुर मेरे प्राण अधारे	195
साध संग हरि उत्तम संग	263
साध संग जिस हरि हरि धिआया	47
सति संगत गुरू की हरि पिआरी	262
सतिगुर प्रभ भेद सिमरन नाम परूफ	48
सतिगुर पूरा आराधिऐ	49
सतिगुर पूरन पुरख सुजान	50
सतिगुर जीओ मेरे पूरे हरि राय	51
सतिगुरू नानक दयाल माहि	176
सभ किछ मिला तुमहें दान में	196
सभ थां सोहणे मनमोहन पिआरे	198
सवास सवास प्रभ नावैं	261
सच्चा परवरदिगार	224
सिख सो जो खिमा विचारे	52
सुण सुण जीवां अमृत बाणी	225
सुण बेनती मेरी प्रभ किरपाल	264
सुणां पढ़ां नित तेरी बाणी	277
सुणो अरजोई दीन दयाल	201
सुणो बेनती मोहे नाम दीजे	53
सुणी सच्ची बाणी गोबिंद तुमारी	155
सुखदाई प्रभ अब तब सभ जाणै	54
सूरा सो जाणेआ जिन हरि रंग माणेआ	55

संतां सिदक हरि पूरा कीनेआ	56
साहिब आपने की करो चाकरी	200
साहिब मेरो मेहरबान भयो	57
सेव सेवण रामायण गीता	58
सो सुहागण मेरे सतिगुरू जो प्रीतम	179
(श)	
शरन पड़े दोये हत्थ जोड़	199
शरण पड़े दोये हत्थ जोड़ सुण लेओ	265
शिव शकती बिन चले ना खुदाई	113
(ह)	
हउ कलि माहि नाम बिना	197
हम करने आये लोक भलाई	202
हम पापी हम ऐसे	59
हक्क पराया जो खावे	266
हरि की सेवा उत्तम संतो	60
हरि के बंदे हरि किओं भुलायें	268
हरि जीओ किरपा करो	203
हरि प्रभ पूरे ठाकुर सुआमी	61
हरि राय सिमरे सचखंड वासी	62
हरीश चंदर राजन सच्च धन	63

धन नानक

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नानक सच है, नानक है भी सच,
नानक सच है नानक सदा ही सच॥

धन
नानक

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अरजोई निराधार

हे दाता,

पहली उपमा तेरी दाता, दूजी तेरी खुदाई,

तीजी तेरी ओट आसरा, चौथी रहिनुमाई,

पँच घरों सो तेरा माण, पँचम सांझ जगाई,

मैं नीच तेरे दास को दासा, धन नानक सभ तेरी वडियाई॥

धन
नानक

आदिमणी

धन
नानक

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

साध संग जिस हरि हरि धिआया।

दर्शन अगम रूप जग माहि समाया।।

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

उत्तम नाम तुमारा माधो, सभ माहि समाया॥
गुण नाही मोहे ठाकुर, मन तुध संग सितलाया॥
हरि गोबिंद पूरा प्रभ आपे, हरि साजन अमृत नाम कमाया॥
कामन काया कंत पिआरी, गुर पूरे मेल मिलाया॥
नानक प्रभ दरस दीजिये, जन दर्शन सुख निहाया॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

अठसठि तीरथ का वरदान,
दर्शन सचखण्ड नानक धाम, कलि महि है प्रधान,
सर सरोवर करो इश्नान, निस दिन सचखण्ड नानक धाम।।
सतिगुर मेरे सुणो अरजोई, मोको दान दीजै हरि नाम।।
भज मन बावरे भज मन नाम, को काम नहीं तन को चाम।।
भोर भई और नर नहीं जागा, दिन दिन पल पल भई शाम।।
बिन सिमरन जम का भौ लागे, सगल जहां के बिरथे काम।।
दर्शन को काहू को नाही, वसतू पराई जाण तमाम।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अमावस इश्नान उत्तम भयो, तन मन धन गुर चरनी थीओ॥
जनम जनम के पाप मिटै होवै दूर हनेरा,
जो जन गुर की शरनी परेओ पावै सुख घनेरा॥
जप तप दान पुन्न फल मिलेओ गुर से भाई,
हउमै मार हंकार तज मन की मैल गवाई॥
सभै इच्छा पूरीआं जब होये सतिगुर दयाल,
गुर की महिमा कथी ना जाये अंग संग चले नाल॥

गुर के बचन मन्न मेरे जीआ हरि को हिरदे वसाऊँ,

दर्शन कहे सुण मेरे चीता मुक्ती का वर पाऊँ॥

(यकीन)

(दोहा)

आ अल्ला, आ राम आता है, अल्ला तो आ जाता है,

अगंम आ ईहां आ उहां इक ओंकार॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अलख नारायण निरंजन मेरे राम, काटो बंधन मेरे पुरख सुजान।।
तुध आगे अरजोई हमारी, दास करो परवान।।
सिमरे नाम तुमारा मेरे ठाकुर लख चुरासी कट्टे जाण।।
दरस देओ मेरे तीर त्रकड़ी सुलतान।।
तुम मेरे पिता परमेशर गोबिंद भगवान।।
तरे तिरलोचन सिख की निआई, गुरू चेला इक समान।।
बचन मन्न मेरे भाई दर्शन प्रीत तुध संग लाई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(पदम पँचमणी)

अमृत पीओ जुग जुग जीओ, यश यशवंती हरि चरणी थीओ।।
थान थनंतर वसै बैकुण्ठ वासी, चवर छतर नाथ विशश दीओ।।
लखां हूरां लखां इंदर, सेव करेंदे लख सूरज चंदर।।
लखां देवीआं कोटी देवते, लख कोटी सेवन पीर पैगंबर।।
लखां अहिलया लखां गौतम, हथ जोड़ खड़े लखां गोरख मछंदर।।
ब्रह्मा महेश विशनूं जपते, भेख वेस तन धार कलंदर।।
कहु दर्शन चरनामत लीओ, तन मन धन सभ प्रभ को दीओ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अमृतधारा बरसै मनवा, करले तूँ इश्नान,
जनम जनम के धुल जायेंगे तेरे पाप तमाम, भजले राम, भजले राम।।
रोम रोम में रम जाये जो, वो है राम का नाम,
शरधा से तूँ धिआले पिआरे, पूरन होंगे काम।।
राम नाम से पत्थर तर गये, राम है तारनहार,
राम नाम की महिमा निआरी, पूजे कुल जहान।।
राम है विशनव राम महेश, राम है ब्रह्म गिआन,
जो जन सिमरे सच्चे हिरदे, दर्शन दीओ राम।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अमृत नाम सिमर मन मेरे, नानक अपणी मेहर करीजै॥
नैन तरस भयो दरस तुमारे, राम राजे दुख काटो हमारे॥
हम ना जानो तेरी माया, मेघ राज हुकम फुरमाया॥
संत सहज सद अटल दयाल, होये मेरे ठाकुर नंद गोपाल॥
गोबिंद देख दरस तिहारे, नित दिन दर्शन नीच तुझे पुकारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अक्खां दा तकणा काम दी है भावना,
कन्ना दा ए सुनणा, रूप है शैतान दा।।
नक्क दा ए सुंघणा गुण पसू माल दा,
सवादां दा ए चखणा रस है जुबान दा।।
सरीर दी ए गरमी सबूत है हंकार दा,
मनुख दी ए सोच सप्प ते बांदरी दी चाल दा।।
सभे गल्लां सिधीआं ते सच्चीआं ने जापदीआं,
दर्शन दीआं बुझारतां साहिब ते जनाब दीआं।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

आपे आपणे आप काज सवारे, हरि साजन मीत पिआरे॥
आपे साजे आप निवाजे, मेरे सतिगुरू नंद गोपाला॥
गुर पूरा प्राण अधारा, तिस सतिगुर को नमस्कारा॥
हरि राखो मैं बंदा तुमारा, बिन नामै ना होसी पार उतारा॥
गुरू वड्डा गुरू गोबिंद, दरस पेख उतरे चिंद॥
एको बणत बाणी बण आई, दर्शन गुर पूरे गोबिंद गोसांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

एको सभना दा दाता, एको है पुरख बिधाता।।
एको का सगल संसारा, एको जग माहि निआरा।।
एको शब्द नाम खुमारी, एको हरि प्रीत निआरी।।
एको नाम हिरदे वसाऊँ, एको संग परम पद पाऊँ।।
एको गुणी निधान बिधाता, एको दर्शन सभ का दाता।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

इक्को दाता इक्को उम्मत, भिन्न भेद नाही कोये।।
भेख उतारण वेस सवारण, प्रभ सहाई आपे होये।।
ऐथे ओथे रहे निआरा, भगत वसल किरपा सोये।।
सच्ची सांझी सोभा उसदी, दर्शन कारज हरि संग खलोये।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

एक ऊपर ओंकार सजाया, सतिनाम दा जाप कराया।।
तिस की सुणी वडियाई, आपे आप हरि सिओ,
हरि जन सेव कमाई।।
गुरू मिलेया वडभाग सेती, हरि जन जोती जोत समाया।।
आप नारायण नर बण आया, चार कुंट दस दिसा तारे खुदाया।।
नानक नाम कलिजुग कलि माहि,
दर्शन दास जुग जुग रहिआ समाया।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

एक ओंकार राओंकार सैभं सतिनाम,
सतिगुर समुंद हरि नाम समाये॥
दान देओ नाम भगतन को,
जिस संग पँच दुष्ट भरम छूट जाये॥
एक ओंकार राओंकार सतिनाम जोत निरंजन,
प्रभ अबिनासी अंतरयामी, दर्शन दास तेरी शरनाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

एक घड़ी साध संग हरि पल निभसी नाल,
मिलेया हरि प्रभ ठाकुर जीओ॥
शब्द जपेआं अंतर उपजै परगास॥
अगम जोत हरि जन हरि चित्त निरंजन वास॥
हरी दास आपे तूँ दासन को दास, संत सच्च नाम रस॥
रसना जै जै करेओ कार, गुरू गोबिंद गुरू नारायण जीओ॥
गुरू पारब्रह्म गुरू नानक रहेओ हर थांई॥
दर्शन गुरू भेटेओ आपणा, छूटी जम की फाही॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सहज सुख सुनेदड़े सतिगुर,

सच्च संतोख दया नाम चहुं धरमां दे सांई॥

एको वरन एको धरम एको करम गुसांई तूं सभनी थांई॥

सिरजनहार सच्चे पातशाह सच्च तप्पसिआ सच्च चंदरमाये,

दिसे नाही दिसाये॥

सिदक भयो हरि अरजन को शहादत सिर दीजै,

गुरू तेग बहादुर पिता गोबिंद राय, जिनही दीओ पंथ खालसाये॥

सच्च सिदक सरबत्त साध संगत शहादत सिंघ जो बण जाये,

भूल गयो वचन गुरूवन के दीओ फिर समझाये॥

दास धरम चलेओ फिर कलि माहि,

जिस दे सांई दर्शन अगम गोसांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सगल धरत तुमारी राम जीओ, हम भयो कीट पतंगा॥
तुध आगे अरजोई हमारी, काटो जम का फंधा॥
निरगुण सरगुण राम मेरो भाई, पाप प्रभ बख्शंदा॥
करो चाकरी आपणे सतिगुरू पिआरे,
दर्शन राम तेरे काज सवारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सति नारायण सति सिंगारी, सरसवती माँ आदि नमैं।।
श्री लक्ष्मी बलबावन भयो, आदि नारायण पूरन कीओ।।
श्री लक्ष्मी नाम माया नाही, श्री लक्ष्मी नाम मात ज्वाला।।
श्री लक्ष्मी आसन जगदीश महि बैठेओ, लक्ष्मी जग की बाला।।
ओंकार निराधार निराकार सुआमी, हरि आपे अंतरयामी।।
धन गोबिंद ठाकुर तुम पूरण पुरख अबिनासी,
सुणो बेनती जगजीवन दाता।।
हरि आपे तूँ पिता माता मोहे गुण नाही कोये,
दर्शन हरि तूँ बंधप भ्राता।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर सेवा सिख कमावै, सतिगुर शरण परम पद पावै॥
सतिगुर लीन सिख लिव लावै, सतिगुर सोभा सिख जन पावै॥
सतिगुर सिख कार निआरी, सतिगुर शब्द सिख नाम खुमारी॥
सतिगुर सति सिख जो जाणे, सतिगुर सिख सदा अनंद माणै॥
सतिगुर सिख सगल संसार, दर्शन जन तिस को सदा नमस्कार॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर सोभा जग से निआरी, सतिगुर सेवा प्रभ नाम खुमारी॥
सतिगुर सफल मूरत अकाल, सतिगुर खालस अटल राज॥
सतिगुर सुन्न समाधी ओंकार, सतिगुर सेवन सुआमी निराकार॥
सतिगुर त्रिलोकी पूरन काज, सतिगुर जोती आदि निराधार॥
सतिगुर उपदेश शब्द सवारी,
दर्शन सतिगुर चरण आतम पिआरी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर गुरू गिआन दीआ, गुरू हुकम मन्न मेरे जीआ।।
हुकमे अंदर सूरज चंद पवन सभ तारे,
नदर करे जे मेरे राम पिआरे।।
करां अरजोई मेरे सतिगुर दरस देओ खसम हमारे,
नानक कहे बिन हुकम ना तरसैं हुकम मन्न पिआरे।।
सेवा संतन की भली संत सेव कमावे,
सेवा जगत ना संग जासी नाम चित्त लाये।।

नाम सो जन सिमरे दर्शन जिनहे गुरू जनाये,
दुनिया दे वाली राम दीआ सुगरीवे राज,
दैंत दुष्ट मारे बाली मार दिखाये॥

(यकीन)

शलोक

साध संग जिस हरि हरि धिआया।
दर्शन अगम रूप जग माहि समाया॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर प्रभ भेद सिमरन नाम परूफ॥
सतिगुर सार शब्द शरण मख़लूक,
सतिगुर प्रभ अबिनासी निरवान सरूप॥
सतिगुर भगती भगत संग अटूट,
सतिगुर आप करनेहार, दर्शन भवजल पार उतार॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर पूरा आराधीऔ, मन शांत हो जावे॥
सतिगुर पूरा भेटीऔ, जम लागे ना आवे॥
सतिगुर साजन हरि पूरा, मेरे प्रभ सुआमी॥
सतिगुर गुर मेल मिलायेंदा, मेरे प्रभ अंतरयामी॥
सभहि जगत सुखी खावे और सोवे,
दर्शन नीच दुखी जागे और रोवे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर पूरन पुरख सुजान, सतिगुर एको वैरी मीत समान॥
सतिगुर सुभागे जीव जंत धिआन,
सतिगुर आदि जुगादि मेहरबान॥
सतिगुर पँच शब्द फुरमान, सतिगुर सुरत धन रहमान॥
सतिगुर लीन सच्च लिवलान, सतिगुर शाह शाही सुलतान॥
सतिगुर दया दयावंद मेहरबान,
दर्शन जन सतिगुर पहि कुरबान॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुरू जीओ मेरे पूरे हरि राय॥
जिस मोहे नाम देहो धन, अपनी मेहर दरसाये॥
तिस सतिगुरू कओ बलिहारी मेरे रामा,
जिस किरपा कीनी सभहि दुख नस जाये मेरे रामा॥
सतिगुरू मेरे अगम अगोचर ठाकुर,
जिस डिठेआं मोह माया छूट जाये॥
दर्शन दास प्रभ पूरा भेटेओ, प्रभ के गुण हिरदे वसाये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सिख सो जो खिमा विचारे, सिख सो जो पराया हक्क ना मारे।।
सिख सो जो खोह के ना खावे, सिख सो जो हक्क हलाल वरतावे।।
सिख सो जो लोभ ना भावे, सिख सो जो वंड छकावे।।
सिख सो जो शब्द मन आवे, सिख सो जो सतिसंगत कमावे।।
सिख सो जो सतिगुर शरन लिव लावे,
सिख सो जो आप जपे अवर जपावे।।
सिख सो जो सहज धारे, सिख सो जो दुष्ट मन मारे।।
सिख सो जो धरम धारे, कहु दर्शन सीस देह सिदक ना हारे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सुणो बेनती मोहे नाम दीजे, मोहे मन कीजो प्रभ वास॥
संत जन हरि तेरो मीत, संतन की पैज राखो प्रभ आप॥
गुरू संग होर नाही कोये, सतिगुरू संग सेवा सफल होये॥
लखमी की ना आवे थोड़, कीजे दया दर्शन कहे हथ जोड़॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सुखदाई प्रभ अब तब सभ जाणै,
जद मन हरि राय मन हर रंग माणै, मुख तों एह समझाई।।
सभ किछ तुझ को सौंपेआ हऊ कुछ संग ना जाई।।
भयो प्रितपाल सतिगुर दयाला,
एह सभ मन जाई,
तूं सभनी थांई दर्शन हऊँ जित्थे जांई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सूरा सो जाणेआ जिन हरि रंग माणेआ,
तोलेआ तोलणहार सुआमी माया संग तोलेआ ना जाई॥
प्रेम भयो कंत राधा प्रेम संग तुल जाई,
आप समाणा आपे सुजाना तुझे धिआना महा सुख पाणा, तुझे मन भाई॥
बिना प्रेम ना कंत भयो तन मन धन सभ छूट जाई॥
सेवा साध संग कीजै साधू बिना ना समाई,
बिन साधू सभ संग छूट जाई॥
संग जासी प्रेम पीआ दास दीन दया दाते,
दर्शन अगम मुक्त प्रभ शरण पाई॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

संतां सिदक हरि पूरा कीनेआ, प्रभ संग जपेओ नाओ जीओ॥
सतिगुरू सेवा उत्तम धारा, सगल थांओ वसेआ ओंकारा॥
राम नाम की महिमा निआरी, बिन नामे जनम जायो खुआरी॥
अपने दास की सुणेओ पुकार, हरि दीजो मोहे नाम अधार॥
भरम कलेस सभहि नस जासी,
जन दर्शन गुर पूरे प्रभ अबिनासी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

साहिब मेरो मेहरबान भयो, संत संग हरि नाम धिआया॥
प्रभ दरगाहे संत की सोभा, सतिगुरू शरन लिव लाया॥
जग माया खेल रचा के, हरि आपणा भेद छुपाया॥
भगत भौ भरम नाही ठाकुर, गुरदेवा जम फंदा छुडाया॥
जन दर्शन करता आप, आदि जुगादि समाया॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सेव सेवण रामायण गीता, गुर किरपा हरि उपजी प्रीता।।
भरम भौ लाथे नाही, चरन कंवल बिन चरनामत लीता।।
नवखंड प्रथम दस इंदरीआं, दस दुआर बवंजा किंगरीआं।।
बारां थंम छत्ती हजार राग रागणीआं,
संत सहज अलख नारायण एको रसना सिमरनीआं।।
चार दिशा त्रिलोकी बसत है, तिस ऊपर बैठे निरंकार लिव लाये।।
बाहर तलाश कुछ नाही पाये, अंतर देह सतिगुर मीता।।
दर्शन जन प्रभ परउपकारी, जुग जुग चलेओ नाम की रीता।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हम पापी हम ऐसे, तुम पाप खंडन जैसे॥
खिन भीतर मोहे पाप बिसारे, देओ दान हरि साजन पिआरे॥
बिन नामै मुक्त ना पावै, नाम बिसारे अवतार धारे॥
मन माहि मन मान जाई, जित तित नाम धिआये॥
दर्शन अगम रूप जग माहि समाये, तूँ सभनी थांई हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हरि की सेवा उत्तम संतो, बिन नामे हरि ना पावे कोई।।
मेरे सतिगुर अगोचर जीओ, रह रवेओ भरपूर सभनी थांई।।
संत संग हरि जपेआ मन होवे निहाल,
कर किरपा मेरे सतिगुर पूरे मेहरबान।।
एको दाता सभहि जीव तुमारे, तेरे जन हरि रहे निआरे जीओ।।
गुरमुख गुर शब्द कमावे, गुर पूरे गुरमुख मन भावे।।
दर्शन कहत शब्द चित्त लावां, आपने सतिगुर बलि बलि जावां।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हरि प्रभ पूरे ठाकुर सुआमी, हर थांई वसे प्रभ अंतरयामी।।

हरि मेरा राम प्रभ अबिनासी,

करेओ दया ध्रुव प्रहलाद जैसी।।

राम राम साधू को जैकार, राम नाम की महिमा अपरंपार।।

किरपा करो दर्शन गुण गावै, हरि जीओ उत्तम नाम तुमारो।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हरि राय सिमरे सचखंड वासी, हरि सिमरे प्रभ अबिनासी।।
हरि सिमरे दुख नाठे, काज सवारे सुख सहज समाये।।
हरि सिमरे ना घण लागे, हरि सिमरे गुर रंग माणे।।
हरि सिमरे नाम अधारा, हरि सिमरे अठसठि तीरथ पार उतारा।।
हरि सिमरे मुख उजिआले, हरि सिमरे मन छूट जाये।।
हरि सिमरे परम पद पाई, हरि सिमरे दीन दरद सभ नस जाई।।
हरि सिमरे आतमा जागे, हरि सिमरे मोह माया तिआगे।।
पँच दुष्ट जम लागे ना आसी, दर्शन गुर पूरे प्रभ अबिनासी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(धर्म)

हरीश चंदर राजन सच धन कमांवदे,
बहु बिध दान धर्म करम उपकारी।।
प्रभ सेवा हुकमे गुर भाणा मन्नेआ, पतनी मूल गुर दक्षणा तारी।।
पुत्तर दफनी जगह ना मिलसी, खसमे कार मेरी वफादारी।।
सति संतोख धर्म राय डोलेओ, जाप ताप तात वफा ईमानदारी।।
जन दर्शन दया करो ठाकुर, ऐसी सुमत्त सोभा जैसी ताबेआदारी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

कर किरपा प्रभ किरपा निधान,
दया मेहर करो मेरे सतिगुरू मेहरबान।।
दरस देख देख मन होवे निहाल, शब्द संग प्रभ भयो किरपाल।।
सिमर सिमर सभहि वेद पुराण, संत सति एको जाण।।
बिन नामै जनम बिरथा जाये, सुनहो बेनती मेरे हरि राय।।
कर साजन कार कमाई, जन दर्शन संग तुम होवो सहाई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

करते पुरख सखी सगल सहेली,
किरपा धारे प्रभ आपणी एहो मुक्त दुहेली॥
दीन दरद सिर दुख कीओ तिनहे उधार,
नाम जपत पूरन प्राणी भवजल उतरे पार॥
नानक आदि जुगादि है भी होसी पैरीं तिनहे नमस्कार,
आ मिल राम पिआरे सहज संतोख पातशाह पावन पार उतारे॥
ब्रह्मा महेश विशनाये कीओ तिनहे नमस्कार॥
भयो कलि माहे रूप नानक दीओ सतिनाम अधार,
दर्शन दास दासन को दासा हिरदे वसै प्रभ परगास॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

करन करावन करता आया, मन चित्त रहेओ समाये॥
बेद कतेब वसै नाही, ना मक्के काबे खुदाये॥
अंतर की बिध जानो नाही, किआ होसी सीस निवाये॥
कूड़ कमावण मनमुखी, गुरमुख प्रीत ना लाये॥
साकत पँच दुष्ट मन संग, अंतर हिरदे हउमै वसाये॥
जन दर्शन नाम दीजो, प्रभ आपे ई होवो सहाये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

करम करीम सेव कमावां, जा तुम होवो सहाई॥
मेहर करो मेरे सतिगुरू सांई, देओ नाम निधान मेरे राम गोसांई॥
मन चित्त आवे पारब्रह्म, हर दम तुझे धिआई॥
तेरी महिमा गुणी गुणिअंत, हरि हरि सिमर सुख बेअंत॥
तूँ ठाकुर प्रभ बख्शंदा, दर्शन नीच जन तेरा बंदा॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

किरपा करो दीन दयाल, नानक गोबिंद सति करतार जीओ।।
मन चित्त सिमरां नाम तुमारा, हरि साजन सुख सुहेलड़े जीओ।।
देखां दरस होवां निहाल, हिरदे वसे प्रभ किरपाल।।
सतिगुरू संग सुहागणा, कुसंगती पीड़ा मरन जीओ।।
मनमोहन मुकंद मुरारी, मनमुख मुक्त करो।।
ओम नमै गुरू अष्ट, भगवत होमेओ अष्ट।।
शांत सीतल सति नारी, दर्शन पुरखन पार करो।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

किरपा करो मेरे ठाकुर सांई, हउ तुध पे वारी जांई॥
जप जीवां तेरा नाओ, मेरे गोबिंद गोसांई॥
सिमर सिमर सभ भयो पुनीत, मैं मूरख किआ चतुराई॥
दीन दरद दुख भंजना, काटो जम की फाही॥
सभहि खेल आपे खेले, दास जनो को दे वडिआई॥
मेरे सतिगुरू कीजो मेहर, राखो अपनी शरनाई॥
एको टेक दर्शन जीवे, काहे को देर लगाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

किरपा निधान किरपा करो जन आपने,
हरि जीओ उत्तम नाम तुमारा।।
बुरा भला किआ जानो ठाकुर, सभ माहे तेरा पसारा।।
हरि नारायण हरि साजन सुआमी, तेरा सोहणा सुंदर मुख सुहावा।।
हरी हरि हरि गोबिंद आपे, गुर शब्द सहज समाया।।
दर्शन प्रभ करे बेनंती, मोहे नाम दीजे मुक्त अधारा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

कालिंगा गुणी गणेश सारंग नाभी विशनूँ,
हिरदे ब्रह्म कंठ शक्ती नैनण उमा महेश॥
मसतक सतिगुर शरन, नानक गोबिंद आदि नमै॥

(यकीन)

(दोहा)

गंगा जमना सरसवती देओ एह वरदान,
शिव उठाओ गंगा विशनूँ दा फरमान॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(भाग्य वर्धक, दातें देने वाली, काली शक्ति)

काली कालिंगा काया कलप करम दाती मुखों एह सहाये,
बोल बचन तहिं हरि दर्शन अटल जाये॥
अटल अष्ट अठसठि तीरथ इश्नान, सचखण्ड नानक धाम॥
जो इश्नान सर सरोवर कर जाये,
तिस जन दुख हरै सतिगुर नाम धिआये॥
नमै नमै नमै नमेओ डंडौत बंदना, आदि जुगादि है भी होसी,
दर्शन प्रभ तेरी शरनाई, हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गंभीर गोसांई गुणिआर बिधाते,
गुर साजन सतिगुर पुरख हरि राय॥
गुणिआर बिधाते गुरू गंभीर पुरख, सतिगुर साजन हरि राय॥
बिधाते पुरख साजन सतिगुर, गुरू गंभीर हरि राय॥
सतिगुरू गुरू गंभीर गुणिआर बिधाता, पुरखै सुजाना हरि राय॥
पुरख सुजाना सतिगुर गुणिआर, गंभीर बिधाते हरि राय॥
सजन बिधाता गुणिआर गुरू गंभीर, सतिगुर पुरखै हरि राय॥
हम गरीब गुण ना कोई, तुम दान देओ मेहरबान॥

मेहरबान मेहरबान हम गरीब देओ दान,
मुक्त भुगत मत्त सुजान।।
गुणी गुणिआर गुरू गंभीर सतिगुरू मेहरबान,
गुरू गंभीर देओ दान नाम।।
प्रितपाल ठाकुर जीओ जो तुध मन भाणा,
देओ दरस दर्शन शरनाई हमे मेहरबान।। (यकीन)

(दोहा)
गुरू बिन नाही कोई सहारा,
गुर शरण मिले मुक्त दुआरा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुर पारब्रह्म परमेशर दीओ नाम अधार,
संत जन तुध नाही भेद पूरन पुरख मुरार॥
सेव भयो जगत संतन की मुक्त कीओ हरि राय,
तुझ माहे मन माने तुम होवो सहाये,
दर्शन सतिगुर पूरे मेरे हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुर पूरा वडभागी पावां, जनम जनम की मैल गवावां।।
गुर मिल होसी नाम अधारा, गुर महिमा तेरी अंत ना पारा।।
गुर बिन ना कोई संगी, गुर संग जम नेड़े ना आसी।।
गुर पारब्रह्म परमेशर पुरख हमारे,
नानक प्रभ दरश देओ, दर्शन देओ पिआरे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुर पूरे हउँ जाऊँ कुरबान, गुर पूरे सदा सदा मेहरबान॥
गुर अठसठि तीरथ इश्नान, गुर पूरे रख आन मान॥
गुर पूरे ठाकुर राम समान, गुर पूरे पँच शब्द गिआन॥
गुर पूरे देवत नाम दान, गुर पूरे वस क्रोध काम॥
गुर दरगाहे पायो माण, गुर के दर्शन दुख कट्टे जाण॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरबाणी गुड़ मीठी लागी, गुरू गुरू गुर दीजै॥
चरण धोये गुर आपणे जीओ, चरणामत भर पीजै॥
सहज निवाजे किरपा करो, गुरमुख गुर नाम दीजै॥
गगन गुरू गंगा गुरू, गुरू गोदावरी जीओ॥
भगवत जीओ, भवजल पार करीजै॥
गुरू राम गुरू विशनूँ ब्रह्मा गुरू महेश पारबती जीओ॥
दर्शन कहत गुरू पूरे, मेरे गोबिंद दरस दीजै॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू सतिगुरू भेद नाही कोये, गुरू सतिगुरू इक थांये खलोये॥
सतिगुरू दीओ मोहे पँच विकार, गुरू मोहे दीओ पिआर॥
सतिगुरू दीओ मोहे जम का फँधा,
गुरू मोहे दीओ नाम का डंडा॥
सतिगुरू दीओ मोहे माया जाल,
गुरू दीओ मोहे भवजल निकाल॥
दर्शन जन कहे गुरू निआरा इआं उआं बणै सहारा॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू नानक सभहां तों वड्डा तेरा महल चुबारा।।
खिमा खुमारी नाम देओ, खोजत मन भयो गवारा।।
सगल सूख रह रवेआ मेरा सुआमी,
बेअंत अगम ऊचा तांका दुआरा।।
देओ प्रीत अपणी मेरे राम जीओ,
करे अरजोई दर्शन बेचारा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू नानक तेरी वडियाई, बेअंत अपरम्पार जीओ॥
मेरे ठाकुर प्रभ दातार जीओ, अंतर की बिध तुध ही जानी॥
सतिगुर आपे करनेहार जीओ, कर किरपा तेरा नाम धिआई॥
तूँ प्रभ मेरा बख्शनहार जीओ, तन मन धन सभ तेरी माया॥
तुम वड्डा हरि मेहरबान जीओ, हरि सेओं हरि मिलेआ माहे॥
मेरा सुआमी दीन दयाल जीओ, नाम सिमर मोहे मन शांत आवे॥
सरब विआपी सतिगुर मेरे जीओ, रह रवेआ सभनी थांओं जीओ॥
दर्शन दास गुरू नानक पूरा भेटेओ, तन मन होया निहाल जीओ॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू नानक दा जपीये नाम पहलां,
जिसनूँ सिमरदा सारा संसार डिट्ठा॥
डिट्ठे ब्रह्मा विशनूँ महेश नाले, राम ते रहमान डिट्ठा॥
देवी देवते जाप करदे, ईश्वर अल्लाह कृष्ण भगवान डिट्ठा॥
रिशी मुनी संत महात्मा दे भेद छुपा के,
खुद खुदा नर नारायण डिट्ठा॥
दर्शन दास वी आखे रब्ब है एको, नानक नाम नवां रख दित्ता॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू नानक मेरे होये सहाई, संत सेती हरि नाम धिआई।।
कलह कलेश सभ कीनो नास, हिरदे वसे पूरण परगास।।
गुरू बिन संग ना को तेरा, परदेस वसेओ हरि प्रीतम मेरा।।
सपत सिंगार घर जासी नार, बेद कतेब करते पुकार।।
दर्शन दास मन चाओ लागा है,
दरस दीजो हरि मन खोल किवाड़।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू प्राण पंथ पूरा, गुरू बिन जन सदा अधूरा॥
गुरू प्रभ जानो एक, गुरू बिन नाहीं कोई टेक॥
गुरू प्रभ भरे भंडार, गुरू बिन नाही उतरे पार॥
गुरू प्रभ एको आस, गुरू बिन नाही कोई सच्ची रास॥
गुरू शरण मिले मुक्त दुआरा, दर्शन भवजल पार उतारा॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू प्रेम सभ से निआरा, गुरू शरन मिलसी मुक्त दुआरा।।
गुरू की महिमा अपरम्पार, गुरू संग भवजल होसी पार।।
गुरू संग प्रभ सदा दयाल, गुरू सेवा कारज आवे रास।।
गुरू किरपा प्रभ होवे सहाई, गुरू उत्तम नाम कमाई।।
गुरू गिआन गुण भंडार, गुरू करम धरम चार।।
गुरू भेद ना सतिकरतार, गुरू हिरदे वसे अगंम दातार।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू प्रेम रखणा, गुरू हुकम माहि चलणा,
हुकम मन्न होवे पार उतारा॥
हुकम मन्ने दरगाहि मान पावे, अठसठि तीरथ करे पार उतारा॥
हुकम मन्ने दुख ना बिआपे, सुख देहु सहज करतारा॥
हुकम मन्ने परमपद पावै, होसी ऊचा तेरा सेवादारा॥
हुकम मन्ने जुगादि होसी सच, नानक सच है नानक सदा ही सच॥
तूँ प्रभ पाप बख्शंदा, दरस देओ करां बेनती, दर्शन दास तुमारा॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुरू पूरे मेरे ठाकुर नारायण,
आपणे सतिगुरू हऊँ जाऊँ कुरबान जीओ॥
हरि जन हरि एको समान, मेरे प्रीतम भयो मेहरबान जीओ॥
साध संग प्रभ होवे दयाल, नाम जपत सफल सभहि काम॥
सतिगुरू नानक वड्डे साहिब सांई,
दर्शन कहत हरि सिमर मुक्त पाई,
पूरन पुरख बख्शो जन आपने वडियाई॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

गुर पूरे मेरे पिता दसमेश,

दयाल होवो काटो भरम कलेश॥

सिमरे नाम तुमारा मेरे साहिब जीओ,

संत रैण इश्नान परहरे जीओ॥

अंधल टेक तुमारी मेरे सुआमी, भवजल पार करो॥

तपों राज बिठाइंदा, दर्शन राजों रंक करे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(अष्टभुजी शक्ति, विपदा टालने वाली - दुख भंजन)

चतरभुजा चौमुंडा देओ हरि राय,
दुष्ट दैंत जिस संग सभ मर जाये॥
देओ शिव सहज वर एहो दास मन भाये॥
जोत निरंजन नीलकंठ नारायण नारंग नारूपी,
निरभौ निरवैर दर्शन संग समाये॥
जहां दिसे दास दर्शन तहां होये सहाये,
ओंकार ओम नमो शिव समाये हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

चवर छतर लेओ बैठेआ ठाकुर, आदि जुगादि रहेओ समाये।।
अगंम मुगध रूप धारेओ, लाज पैज हरि भगत बचाये।।
पँच नीती धरम भिखारेओ, गिरेआ असमान चढ़ाये।।
उत्तम नीच भेद ना जानेओ, कीड़ी से गज मरवाये।।
जन दर्शन प्रभ सुणो बेनंतीआं,
मन चित्त प्रीत कैसे लाये।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

छोड़ मन मोह ममता सतिगुर शरन धार,
देओ दरस दातार नानक नमहि अष्ट महेश तिनहे नमस्कार।।
मै तुझ ता नहीं तूँ मुझ में, ईहां उहां निरगुण सरगुण में।।
दर्शन देख जीवां प्रभ तेरे काटो कलहि कलेश भरम मेरे।।
विछड़ां तुझ से पतित बन जाई,
पावन पवित्र पूरे गुरू मेरे, नानक दास गोसांई।।
पँच दुष्ट मन मोहे बिसारेओ, पैरीं पउणा जग वरताओ।।

सिमरे राणा रंक बराबर, देओ दर्शन मेरे ठाकुर॥

मन मणत गुणी गुणिअंत, तेरी वडिआई कथी ना जाई,

कोट कोट कोट पाप बख्शंद॥

(यकीन)

(दोहा)

चारमुखी दीवा चारे धरम कहाये, सति संतोख दया नाम,

चारमुखी दीवा इक वरण समाये,

साध संगत बहु बिध परम धाम॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जगत जलंदा राख लओ, प्रहलाद अपनी किरपा धार,
जिनहे मन हरि नाम वसे तिनहे ना सके कोई मार॥
गज गुंझल तंद देवे तोड़ी सुणी मीत पुकार,
बख्श लेओ देव दैंत नानक पुरख मुरार॥
दीओ ताज सिर भगतन को धनुष रूप धार,
काया कामन इंदर राय दीओ तिनहे सवार॥

लीओ कलि माहे जोत निरंजन नानक गोबिंद अवतार,

चोर राक्षस ठग सभहि ही दीओ नाम अधार॥

सेव भयो संत पुरखन की दर्शन सुणेओ प्रेम पुकार॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जन्नत ए जान गुरू गोबिंद सिंघ, सोढी ए सुल्तान गुरू गोबिंद सिंघ।।
खुदाई ए रहमत गुरू गोबिंद सिंघ, आदम ए अहमद गुरू गोबिंद सिंघ।।
मकस ए मकसूद गुरू गोबिंद सिंघ,
खलक खालक ए मखलूक गुरू गोबिंद सिंघ।।
शमस ए शमशीर गुरू गोबिंद सिंघ, आलम ए अमीर गुरू गोबिंद सिंघ।।
कातब ए तकदीर गुरू गोबिंद सिंघ, खुद खुदा ए तसवीर गुरू गोबिंद सिंघ।।
हुसन ए सरूर गुरू गोबिंद सिंघ, दोस्त ए दसतूर गुरू गोबिंद सिंघ।।
नज़र ए नूर गुरू गोबिंद सिंघ, हादरा ए हदूर गुरू गोबिंद सिंघ।।
राम ए रहीम गुरू गोबिंद सिंघ, करम ए करीम गुरू गोबिंद सिंघ।।

नर ए नसीब गुरू गोबिंद सिंघ, गुख ए गरीब गुरू गोबिंद सिंघ॥
बापरवाह ए बेपरवाह गुरू गोबिंद सिंघ, बादशाह ए शाह गुरू गोबिंद सिंघ॥
बेआसा ए आस गुरू गोबिंद सिंघ, मुहताज ए बेमुहताज गुरू गोबिंद सिंघ॥
तन मन धन तान ए गुरू गोबिंद सिंघ, जनक ए जान गुरू गोबिंद सिंघ॥
हमदम ए दरद गुरू गोबिंद सिंघ, दुखी ए हमदरद गुरू गोबिंद सिंघ॥
दीन ए दाता गुरू गोबिंद सिंघ, काना ए काअबा गुरू गोबिंद सिंघ॥
पूरन ए पुरख गुरू गोबिंद सिंघ, आदि ए गोरख गुरू गोबिंद सिंघ॥
रब्बी ए अवतार गुरू गोबिंद सिंघ, दर्शन ए दीदार गुरू गोबिंद सिंघ॥
सच्ची ए सरकार गुरू गोबिंद सिंघ, शाह ए शाहूकार गुरू गोबिंद सिंघ॥
पँच ए सतिकार गुरू गोबिंद सिंघ, पँचम ए एतबार गुरू गोबिंद सिंघ॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जब जब होसी अरिशट अपारा, तब तब देह धारे करतारा।।

अकाल पुरख जब भयो दयाल,

तब तब संत जनों की कीओ संभाल।।

गुरदेव माहे भेद बताया, धरम से वरन करम से जात।।

(यकीन)

(दोहा)

जिस हरि नाम मन भाये,

सो जन मुक्त पाये हरि राय।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जल थल गगन तेरा पसारा।।

सूरज चँद उगवै दिन राती, गुर बिन घोर अंधारा।।

देओ मीत सजन मेरे रामा, मेरे जगन नाथा।।

आप बिठावे सद संगत आप कीओ परवाना।।

बंदना करूँ तुध आगे मेरे रामा, दर्शन देओ सोढ़ी सुलताना।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

त्रेता राम अवतार धारे, दशरथ राजन आंगन कुशलेआ नारी॥
राज तिआग चले बन को लखमन संग जानकी पिआरी॥
हक्क दिवावण भगत सुगरीवे परलोक भेजेओ बाली हंकारी॥
जात पात भेद छोड़ सभहि भीलण नीच जीओ किरपा धारी॥
रघूकुल रीत राखी लाज लंकेश मार प्रजा सवारी॥
दर्शन कहत प्रभ किरपा कीनो मोहे नीच को अब ओट तुमारी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तिस सतिगुर महि जाऊँ बलिहार,

जिस गुरू मिलायो मेहरबान॥

तिस सतिगुर महि करूँ बेनंती, जिस गुरू दयो दयावान॥

तिस सतिगुर महि सेव कमावां, जिस गुरू भेद इक समान॥

तिस सतिगुर महि करूँ चाकरी, जिस गुरू मन माने मान॥

मेरे मन हरि प्रीत लागी, दर्शन छूटे सभ अभिमान॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुझसे बिछुड़े गोबिंद ठाकुर दात संग कीये पिआर,

दातार दाते नानक गोबिंद, तिनहे डंडौत नमस्कार॥

काल भानी दीजै दान अपणी किरपा धार,

आदि नारायण आदि नारी महादेवा,

नव शक्ती पारवती गुरू ब्रह्मा विशनूँ महेश॥

कारतिक कीओ कीरती गुण गुणिआई मंगल गणेश,

नास कीओ दुष्ट दैंत रावण कंस हरनाकश,

चंड मुंड नरसिंघ कीओ आदेश।।

कीओ प्रगट भगवती चंडी पिता दशमेश,

पुत्तर कीओ प्रभ के अधीन नानक प्रापत काया कलप कालिंगा,

सतिगुर सतिपुरख संत सुजान।।

आदि जुगादि है भी होसी सच सेवा दर्शन नाम अधार।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुम पातशाहों का पातशाह, सच्चा पालनहार जीओ।।
नाम तुमारा सिमर ठाकुर मेरे, किरपा करो गोबिंद दातार जीओ।।
तुम ईश्वर तुम आलमदीगार, मेरो अंतरयामी पुरख मुरारे।।
तेरा रूप अनेका रंग जीओ, महिमा तेरी अपरम्पार।।
दर्शन जन करे अरजोई, दरस दीजे गुरू नानक सुलतान जीओ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुम मेरो साहिब ऊच महान,
मनमोहन तेरे बलि बलि जाऊँ दीजो मोहे वरदान॥
राम नाम की बरखा होये, प्रेम रस दीजो मोहे,
मिटे जनमों की पिआस॥
वड्डे तेरे महल चुबारे, खेले खेल जग से निआरे,
बेद कतेब करे बखान॥
तूँ साजन तुम प्रीतम पिआरे, दीजो शरण दास पुकारे,
दर्शन जाऊँ बलिहार॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुम मेरे प्रीतम प्रभ किरपाल, शब्द जपत मन भयो निहाल।।
गुर बिन गिआन ना होसी भाई, गुर बिन पूरी भगती ना होई।।
प्रणवत पूरण गुरू नानक सांई, दरस देखत जम की छूटी फाही।।
एको तेरी कुदरत मेरे सतिगुरू, एको रूप साध संगत संग समाई।।
मैं ना जानो गुण अवगुण धरम करम,
दर्शन दास गुर पूरे संग मिटे भरम।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ अल्ला तूँ राम रहीम, तुम मानेआ मन माने॥
ठाकुर प्रितपाल सतिगुर, तूँ जिनहे जनाये सोई जाने॥
साध संग जिस हरि हरि नाम धिआया,
दर्शन मुक्त अधारा, नाम रस फल पाया॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ सखी तूँ सखा, नानक प्रभ गुरमुख राखा जीओ॥
नैन तरसन तुमारे दर्शन, मन साध संगत बिगासा॥
तूँ मेरा बंधप तूँ मेरा सुआमी, हरि तुम आप भ्राता॥
मन पिआस सतावे दिन राती, अमृत नाम प्रभ तांका॥
हाथ जोड़ बंदना तुध आगे, दर्शन निमाणे काटो पाप हमारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ सभनी थांई जिथे हउँ जांई,
तेरे गोसांई, तेरे सांई, तेरे सांई॥
सुनेंदड़े सोहणे सुंदर शाम,
राधा कंत भये होये सहाई,
तूँ सभनी थांई तूँ सभनी थांई,
तूँ सभनी थांई हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(दोहे)

तूँ सांई दीन दयाला, तूँ मेरा प्रीतम प्रितपाला॥
तूँ नदर करे जिस ते करतार, सोई उतरे भवजल पार॥
तूँ सभ तों सुघड़ सिआणा, मुझ नाही गुण सार ना जाणां॥
नाम रतन तुध सिओं पाये, तेरी उपमा जीहवा गाये॥
रोम रोम में नाम समाये, दर्शन नदर करो हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ बेअंत बख्शंद बख्शणहार बाबा,
गोकुल मथुरा रामा कृष्णा अल्लाह हू ए मक्का काअबा।।
वेद पुराण कतेब सभहि जोगी जोगेशवर ढूँढ थक्के।।

(यकीन)

(दोहा)

तूँ देंदा आया देवणहार, तूँ करता पुरख मुकंद मुरार।।
तूँ आपे लावें लिव करतार, तूँ आपे करदा भउजल पार।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

तूँ महाराणी जग कलियाणी नवशक्ती माँ आदि भवानी॥
महिसासुर दैंत संहारे, चंडमुंड राक्षस मारे॥
वध कीओ भैरो वली का, जै जैकार होवे वैशनूँ राणी॥
नैना देवी रूप निराला, भद्रकाली मात जवाला॥
अष्ट भुजी सिंघ सवारी, कलह कलेश दुख निवारी॥
चिंता पुरणी चिंता हरदे, मनसा देवी पूरी मनसा करदे॥
चौमुंडा देवी माँ शारदा पिआरी,
सीतला मईया करो आप रखवारी॥

ब्रह्मा विशनूँ महेश धिआवे, रिशी मुनी वर तुझ ते पावे॥
महिमा तुमरी जग से निआरी, दर्शन दीजो आदि कवारी॥

(यकीन)

(श्लोक)

तेरी कुदरत तेरी जन्नत, अजब तेरा संसारा,
तेरी रचना तूँ ही जाणे, मानस थक्क हारा॥
मन तूँ काहे फिरे नादान, बाहर ढूँढे मिल नाही पाये, पूरन भगवान॥
बाहर ढूँढे किछ हाथ ना आये, अंदर देही सभ किछ पाये,
एह बिध गुर आप बताये, जो हरि सिओं प्रीत लगाये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

तूँ माई तिंन पूत जाई, ब्रह्म महेश विशनव तांई।।
शिव शक्ती बिन चले ना खुदाई,
दरस देओ मेरे नानक, सुणो बेनती गोबिंद गोसांई।।
परमगत जानी मन मानी,
गोबिंद गोबिंद जपे मन मेरा, गुर बिन संगी ना को तेरा।।
सतिगुर संग हरि कीरतन गावां,
चरण धोवां संत सजन के, जनम जनम के दूख गवावां।।
एह हुकम मन्न होवां परवान, दर्शन गुर आपणे जाऊँ कुरबान।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ मेरा ठाकुर गोबिंद गोसांई, राखो पैज मेरे सांई जीओ।।
मैं निरगुण को गुण नाही, सेव कमावां नाम धिआवां,
तुझ ते हउँ कुरबान जावां।।
चसां ना बिछुड़े हरि जीओ, साजन मीत धन थान सुहावा,
अनहद शब्द प्रभ दीजै, मेरे साजन मीत पिआरे।।
आपे करता आप करावै, नानक जो तुध मन भावै,
हम नीच करसां अरजोई, दर्शन निमाणे हरि दीजै ढोई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ वड्डा तेरा नाओं वड्डा, वड्डे तेरे खेल पिआरे, मैं जाउँ बलिहारे।।
तेरे दरबारे सोहवे संगत, अजब निराली तेरी रंगत,
मेरे गिरवरधारे।।
राजा रंक बराबर जानेओ, उत्तम नीच भेद ना मानेओ,
मेरे पुरख मुरारे।।
तूँ दयाला तूँ किरपाला, तूँ मेरा प्रीतम प्रितपाला, दीजो नाम दातारे।।
आपे बख्शे तूँ वडियाई, जो तेरे मन भाई, दर्शन पार उतारे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तेरा कीरतन कीरती, किरत करां दिन रात॥
बैकुंठ वसै राम दयाला जीओ, बिन नामै हउँ कमजात॥
नाम कमावै हरि गुण गावे, सतिगुरू शरण अमृत भोजन पावै॥
हर वेले वाहो वाहो गुर रसन बखाने,
किरपा करो मेरे ठाकुर मेहरबाने॥
मन अन्न पाणी ना भावे जीओ,
दर्शन निमाणे तुझ बिन किवें सुख पावे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तेरा नाम हरी हरि पूरा, दीजो दान साधू की धूड़ा॥
सतिगुरू मेरे गुरू नानक सांई,
गुरू नारायण सतिगुरू दीन के दाता जीओ॥
आपने भगतों को दीजै वडियाई, सच अटल निधान कमाई,
सच साहिब संग होवो सहाई॥
जन दर्शन की सुणो अरजोई, बिन नामै ना मुक्त पावै कोई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तेरी महिमा बेदां तहि नाही जाणै, संत की शरण हरि रंग माणै॥
तूँ मेरा रंग रंगीला साजन, दरस देओ मेरे राम गोपाला॥
आपे साजे सगल संसारा, सगल वसत माहि तेरा पसारा॥
इक वसतू गुरू देवै भाई, दर्शन मुक्त हरि नाम बिन ना पाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तेरे गोसांई राम रहीम करता,
अकाल नर निरंजन निरंकार गुर प्रसादि मुक्त पाये॥
तेरे सांई दर्शन अगंम गोसांई,
राम रहीम बैठे इकट्ठे बखेली जग माहे समाई॥
सो जन जाणे जिनहे जनाई तेरे सांई दर्शन अगंम गोसांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तेरे भरे भंडारे लाल जीओ, तेरे खेल निआरे।।
जुगां जुगंतर हरि आपे वंडदा आया,
भगत वसल तेरे नाम दुआरे।।
तन कुल्ली गुल्ली सिमरन तेरा,
चमकी जुल्ली सबंसत पँच पिआरे।।
लेवत देवत करता आया, सेव गुरू चौंह धरम तुमारे।।
दर्शन दास तेरी महिमा गावै, अनंत बेअंत तांके ऊँचे दुआरे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

त्रै नारी तिनहे आदि कुआरी, ब्रह्मा विशनूँ महेश तारी।।

सरसवती अष्ट लक्ष्मी अष्ट,

उमा अष्ट वैशनूँ अष्ट।।

सिंघ निरंकार निरंजन नानक गोबिंद,

नमै नमेओ नमेओ नमेओ नमेओ और नमेओ गंगोत्री,

त्रिलोकी राम नमेओ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दया सति संतोख नाम चारे धरम कहावै॥
चौंह धरमी धरम भयो इक वरणी नानक करता,
तप तपसिआ तजेंदे माही तुझ बिन चित्त नहीं करदा॥
जे चित्त आवे तूँ मेरे सतिगुर रख लेओ प्रितपाल गोसांई,
तुझ बिन दुख घनेरे सहणे मेरे राम दीन दयाल सांई॥
तुझे धिआया सुख घनेरा पाया मेरे हरि राया,

राख लेओ मेरे सतिगुर सांई,

पारब्रह्म पूरनब्रह्म चौंह धरमां दे सांई॥

दास दासन को थापेआ हम भूले दर्शन एको ठाकुर देसा॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दरस देओ मेरे राम जीओ, दया करो प्रभ गोबिंद दातारे॥
किरपा निधान प्रभ बख्शंद, मुक्त कीओ मेरे पिआरे॥
सिमर सिमर प्रभ आपना, जीवां मैं प्राण अधारे॥
आदि पुरख भगवती, तिनहे डंडौत नमस्कारे॥
तन मन सीतल होआ, चरण कमल हरि हिरदे धारे॥
दान देओ जन आपने, दर्शन प्रभ सिरजनहारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

देओ दान नाम, आपने दासन को॥
निरंकार नर नारायण, नर निरंजन नर निरंजन,
निरंजन नानक नानक गोबिंद॥
एक रूप एक सरूप कलि माहि,
जहां देखूँ वहां तूँ है दर्शन,
अगंम माहीं तूँ सभनी थांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दीओ मोहे नाम दान, एह गुर की वडिआई,
नाम धिआऊँ हरि गुण गाऊँ, चित्त एहो आस लगाई॥
अवर ना डिट्ठा तुध जेहा, मैं सभ जग ढूँढ आला,
तुध संग नेह तुध संग प्रीत मन तन ए लाई॥
मैं किछ नाही तूँ ए सभ किछ,
तेरी कुदरत तूँ ए सभ विच, ओ मेरे राम रघुराई॥
बिन तेरे मोहे किछ नहीं भावे, तेरी उपमा जीहवा गावे,
करो नदर ए दर्शन सांई॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दीन दयाल सतिगुर पुरख हमारे, हरि साजन मीत पिआरे॥
दया करो प्रितपाल ठाकुर जीओ,
राम नाम समुंद जीओ पत्थर तारे॥
हम नीच किछ जानो नाही, तुम भयो खसम हमारे हरि राय॥
राख लेओ राखनहार सुआमी, दर्शन गरीब ढहि पयो दुआरे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दीन दयाल राम प्रभ शाम अबिनासी॥
न निरंकार कलि माहि नानक,
दर्शन दास तेरी शरणाई हरि राय॥
तूँ सभनी थांई जिथे हउँ जांई,
तुझ बिन नींद नैनण ना आवे,
तुध बिन मन लोचदा हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

धन निरंकार जो करे सो करतार,
नानक एक ओंकार सतिनाम वाहिगुरू॥
नानक सच है नानक है भी सच,
नानक सच है नानक सदा ही सच॥
धन निरंकार जो करे सो करतार,
नानक एक ओंकार सतिनाम वाहिगुरू॥
अकाल मूरत करता पुरख, अजूनी सैभं सतिगुर प्रसादि॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

धन शिव त्रिलोकी नाथा, शक्ती भेद देओ सवारी।।
बांधी ना छूटे दास की जो बांधे तुमारी।।
र रहीम राम नानक, गोबिंद संग सुहागणा, खसमाने शरण तुमारी।।
तूँ सहाई मेरे सतिगुर जीओ, हम भयो दास तुमारे।।
तुध आगे अरजोई हमारी, राखो जगत जलंदा।।
सुणां पढ़ां प्रभ तेरी बाणी, तेरी माया गुणी गुणिअंत ना जाणी।।
तुम देओ दरस मेरे रामा, दर्शन गत तुहारी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

धुरों त्रिलोकी तरशूले नमै नमै अष्ट,
हउमीए अष्ट ओम नमै समाये।।
ओम ओंकार त्रै भवन धरत अवतार,
हउमी अष्ट हउमी अष्ट बणाये तत्त सूहा।।
एक नारी पँज पिआरी, दरस पिआसी करे अरजोई तुध आगे।।
इक रात गोबिंद मुरारी, तुध संग लग सुहागण होसी,
दर्शन चेतना हमारी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नमो गणेश नमो गणेश मात पारबती पिता महेश॥
जो धिआवे फल पावे, मंगल करे गुणी गणेश॥
गज को दीआ बहु माना, जब सीस कीओ परवाना,
गणपती देव नाम सदावे, आरंभ कारज पूजन हमेश॥
शिव शंकर भोले भंडारी, शांत मुगध जटा धारी,
मन चित्त लाये जो आराधे, पूरन मनसा करे महेश॥
माँ पारबती नव शक्ती धारेओ रूप अनेक,
दुष्ट दैंत मारे बण चंडी, दर्शन काटे दुख कलेश॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नानक सच है नानक है भी सच,
नानक सच है नानक सदा ही सच॥
या यूसफ या अली या मुहम्मद या रहीम॥
द दीन दयाल है र राम है श शाम है न नानक है॥
नानक कलि माहि याद है तां सभ किछ है॥
तूँ यहां है वहां है दर्शन अगंम रूप जग माहि तूँ सभनी थांई॥
भरम भौ सभ छूटे दासन दास दसाई,
दास दास दासन दर्शन दास सांई तूँ सभनी थांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

नानक ना+न+क नानक आदि नमै, नानक जुगादि नमै।।
नानक है भी नमै, नानक होसी भी नमै।।
नमै नमेओ नमै नमेओ नमै नमेओ,
नासूरा नासूदा निआसा नौरंगा नौरिंदा।।
निरभैता निरवैरता नौरिंजा निरंकारा निओटा,
नौवंदा निजंदा निआजी निऔजा निवाजा नानक नमेओ।।
नानक नाथ नानक नाद नानक अंगद,
नानक अमर नानक राम नानक अरजन।।

नानक हरिगोबिंद नानक हरि राय नानक हरिकृशन,
जिस संग दूख नाठै सुख घनेरे आये॥
नानक तेग बहादर जिसे धिआया घर महि पाया,
नानक गोबिंदा मेरे हरि राया॥
नानक निरंजन नूरानी नूर दर्शन दास सदेंदा,
दर्शन ही संग होये सहाये हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नानक नाम अमोलक रतन, तिस अंत ना पारावार।।
सतिगुरू शरण हरि नाम धिआया, सतिगुरू शरण परम पद पाया।।
सतिगुरू शरण अठसठि तीरथ इश्नान, सतिगुरू आपणे जाऊँ कुरबान।।
सतिगुरू समुंद हरि गुण भंडार, नानक नाम अमोलक रतन,
तिस अंत ना पारावार।।
तुम मेरो सतिगुरू अटल सुलतान, दया करो मेरे ठाकुर मेहरबान।।
कोई गुण नाही मेरे सुआमी, गुण दीजै गुर पूरे गुणी निधान।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नानक नाम सिमरो संतो सेवक सोभा बण आई।।
हिंदू कहत राम राम मुसलिमा पीरे खुदाई जीओ।।
भिन्न भेद ते बाहर सतिगुरू, हरि सेओ एक जोत समाई।।
आप आपे आपनी बिरध राखो, दर्शन तुझ से प्रीत लगाई।।
(यकीन)

(दोहा)

नाम की दात मिले गुर शरणी,
नाम ते मिले मुक्त दुआर।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नानक भयो किरपाल,
प्रगट भयो नर नारायण, ठाकुर दातार॥
देओ नदर सिरजनहार सुआमी सिर धर दसतार॥
जीअ जंत सभ कीओ पुकार, देओ हरि दर्शन प्रितपालनहार॥
हम नीच किछ जानो नाही तुम भयो खसम हमारे॥
दर्शन नीच देओ हरि दर्शन सतिगुरू काज सवारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(पदम)

नाम जपत मन भयो निहाल, नाम जपत प्रभ भयो किरपाल॥
नाम की महिमा अपरम्पार, सच नाम एक करतार॥
नाम की वडियाई कथी ना जाये, दीजै नाम मेरे हरि राय॥
नाम की हरि जन करे कमाई, नाम सिमर हरि होये सहाई॥
हरि जन नाम पावै कोये, आसा नाम हरि पूरी होये॥
नाम सिमर रसना भयो पुनीत, जिस हरि संग लागे प्रीत॥
दर्शन दास करे बेनंतीआं, हरि आण वसेओ मेरे चीत॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(ओट)

निओटेओं का आसरा निमाणेओं का मान, तुम हो साहिबा सभ से महान।।

दीन दुखी तुध सहारे, निरबल तेरी राह निहारे,
रहमत बरसै सभ पे राम।।

ब्रह्मा विशनूँ शिव वी आपे, राम को देखे शाम ही जापै,
भेद करे कौन बखान।।

हम नीच जानो नाही, किन बिध रिझाऊँ तोहे बनवारी,
दया करो दयावान।।

आन खड़े हम तेरे दुआर, दीजो दर्शन खोल किवाड़,
कर किरपा किरपा निधान।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

निस दिन जपीये प्रभ का नाम, हिरदे अंदर उपजे गिआन,
मन निरमल हो जाई॥
गुर सिओं पाइये नाम निधान, किरपा करे प्रभ मेहरबान,
जनम सफल हो जाई॥
नाम है मनवा मुक्ती दुआर, नाम संग होवे भउजल पार,
नाम बिना किछ नाही॥
नाम अराधे भौ ना लागे, साहिब अंग संग बिराजे,
दर्शन गुरू सदा सहाई॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नीलकंठ नारायण निरंजन निमाणा निआसरा निओटेआं,
नानक प्रभ दीन दयाल देओ दान॥
अंगद अमरदास अमर भयो सोढी पातशाह गुरू रामदास भयो,
दयाल नदर कर अरजन हरिगोबिंद को॥
हरि भयो हरि राय हरिकृशन को॥
हरिकृशन करता करीम करम पुरख गुरू तेग बहादुर जीओ॥
हरि हरि हरि गोबिंद राय दर्शन निमाणा करे बेनती,
मेरा माण तूँ मेरा ताण॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

नैण निराकार निरंजन नारायण सुआमी,
पूरण पुरख पारब्रह्म रा ओंकारा॥
सुख अनंद सुखमनी जप जाप,
सिमरन नाम भगत रहिरास जीओ॥
इहां ऊहां सचा सच समाये,
गुरदेवा गुरदेव अंतर धिआन,
दर्शन सुरत शब्द अनहद लिव लाये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

नैन नैनण नैननण निरंकार,
निरंजन निरवैर निरभौ निरंकार,
नर निरंजन नारायण निरंकार॥
नानक नैनण नानक नैननण निरंकार,
ओंकार सैभंग अजूनी सुखमणी, अनंद साहिब जपजी जीओ॥
जाप साहिब रहिरास नर निरंकार॥
जप ईहां ऊहां सच, ओह कलि माहि सच समाये अवतार॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नंद गोपाल ठाकुर दातार, जो करे सो करतार॥
तूँ पूरन पुरख नानक सुजान,
काम क्रोध मुक्त कीजै, मेरे हरि कृष्ण भगवान॥
नाम सिमर दुख कटे जाण,
कामण कंत संग सुहागण, दर्शन पिर बिन मर जाण॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

पहले घर तों इक सजाया,
तीजे घर तों ब्रह्मण्ड रचाया,
चौथे घर तों ओंकार वरताया,
पँचवें घर तों मनुख सजाया॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

प्रभ जीओ मन चाओ लागा है,
राम नाम सिमर सुख पावां, तेरी किरपा हरि गुण गावां॥
मैं ना जाणा तेरी वडियाई, शरण साधू परम गत पाई॥
सुणां पढ़ां नित तेरी बाणी, नानक एह बिध तुझ ते है जाणी॥
गुर पूरे मेरे गोबिंद गोपाल,
दर्शन हरि आपणे जाऊँ कुरबान जीओ॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

बनवारी बनवासी राम शाम गोबिंदा,
शरन प्रभ धारी लाल लाल लाल लाल रंग पुरखै सुजान॥
हउँ कुझ ना जाणा तुझ रंग राते मन माना,
मन माना मन भाणा मन मान जाणा मन संग ना जाणा॥
मन निरंजन जोत निरंकार है किओं बिष्टा संग प्रीत पाता॥
तुझे धिआणा सभनी थांई पाणा,
जित्थे धिआणा जित जित मन भाणा॥
मंनेआ भाणा तिनहे भवजल पार है, दर्शन जाणा हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(बारह माहा) (भाग पहला)

उदों किथे सओ मेरे साहिबा, जदों लूँ लूँ याद सताई॥
नैण उडीकां हड्डीं रचीआं, आयो ना हरजाई॥
कित्थों सिखीयां नाज अदावां, कित्थों चतुराई पाई॥
उदों नहीं सओ पास असां दे, जदों बिरहों अग्ग मचाई॥
कित्थों पाई शकल नुरानी, कित्थों नूर एह पाया॥
उस वेले कित्थे सओ, जदों सूरज शिखर ते आया॥
ना असीं मंगीये माल खजाना, ना असीं करीये दुआ॥

करदा रवीं पूरीयां लोड़ां, एह साडे दिल दा चाअ॥
ना असीं करीये निंदेआ चुगली, ना असीं करीये शिकायतां॥
देंदा रवीं मंगीयां मुरादां, तूँ ही दीन का दाता॥
ना मैं जाणां थां टिकाणा ना मैं पता पुछां॥
तेरी मेधनी तेरी माया, तेरा रूप है डिट्ठा॥
ज़रे ज़रे च तूँ है रैहंदा, दर्शन हर थां डिट्ठा॥

(भाग दूसरा)

कित्थे सओ जदों रुत जोबन दी साडे उत्ते आई॥
कित्थे सओ जदों चेतर चेते साडी याद ना आई॥
कित्थे सओ जदों फसल बैसाखी, वढण तांई आई॥

कित्थे सओ जदों जेठी परदा, हर लभे रुखीं छाई।।
कित्थे सओ जदों हाड़ पिआसी साडे जवानी आई।।
कित्थे सओ जदों जिंद निमाणी, सावण वांग तिरहाई।।
कित्थे सओ जदों भादों तपस, सीने गरमी पाई।।
कित्थे सओ जदों आसां टुट्टीयां, अस्सू महीने तांई।।
कित्थे सओ जदों कत्ते तारा, साडा नसीबा डुबेआ।।
कित्थे सओ जदों मघ्घर मंगेआ, साडा सुहाग ना मिलेआ।।
कित्थे सओ जदों पोह दी सरदी, अंग अंग पाले ठरेआ।।
कित्थे सओ जदों मांग भरण नूँ माघ सिर ते चढ़ेआ।।
कित्थे सओ जदों फुलीआं कनेरां, फगण बसंती खिलेआ।।

रंग गुलाल सभ पै गये फिक्के, जदों तूँ साहिब ना मिलेआ।।
कित्थे सओ जदों दरस पिआसी दिंदी रही दुहाई।।
उदों तसल्ली दिल होसी, जदों दर्शन मिलेगा सांई।।

(भाग तीसरा)

चेतर चेता आया मैनूँ दोस्ता, तैनूँ वेखां विसाख तांई।।
जेठ जोश जवानीआं दोस्ता, किते ऐवें ढल ना जाई।।
हाड़ हाड़ा तैनूँ दोस्ता, इक वारी शकल दिखांई।।
सावन मारेगा मैनूँ दोस्ता, जिवें मारदा ए कसाई।।
भादों दुखदा ए दिल दोस्ता, तबीब बण तूँ आई।।
अस्सू आसां रखीआं दोस्ता, किते समझीं ना मैनूँ पराई।।

कत्तक कीते इश्क अव्वले दा, किते परदा ना लत्थ जाई।।
मघ्घर मंगां दुआवां दोस्ता, नाकरमी दे करम जगांई।।
पोह पावां रब्ब दे वास्ते, वे टुटी तोड़ चढ़ांई।।
माघ मंगेआ सिंधूर दोस्ता, रत्त मेरी दी मांग सजांई।।
फगण फंधे तोड़के दोस्ता, कदे दर्शन नूँ आपणा बणांई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

बे-डर बे-वैरी बे-अवाजा नाद वजे अनहद बे-वजूद,
बा-वजूद बा-परवाह बंधना बांधी बांधे बांधनहार॥
बिन गुर बांधी ना छूटे नानक बार बार नमस्कार॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

भगत कमाई ठाकुर तुध ते पाई, नाम दीजो दान मेरे राम रघुराई॥
गुरू नानक पूरे सतिगुरू गोसांई जीओ,
किरपा किरपाल घर माहि वसेआ॥
हरि हरि सिमरो मुगध अघाई,
जिनही दीओ जनम तोहे, सोई प्रभ तुध सहाई॥
सुणी सच्ची बाणी गोबिंद तुमारी जीओ, मन तृप्त तन शांत हो जाई॥
दर्शन दास दासों के दास हरि जीओ,
सच सेवा सफल होवे घोल कमाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

भगत कमाई गुर तुझ ते पाई,
सेव कमावां नाम जपावां, जो बख्शो तुम वडियाई॥
हम ठहिरे नीच तुम हो ऊच गोबिंद,
हथ जोड़ करां बंदना, गुरमति दीजै राम रघुराई॥
खिंन खिंन भूलणहार हम पापी, मन बावरा आतम कुरलाती,
बखशणहार कीजो मेहर दर्शन तुम पे आस लगाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

भरोसा रख गुरू आपणे ते, कारज जिहनां सवारेआ,
आदि नारायण संग लछमी, दासन को उबारेआ॥
दीआ नाम दान प्रभ आपणा, मुझ गरीब निवाज जीओ,
नदर कीओ जन आपणे, औगुण ना विचारेआ॥
होये किरपाल सतिगुरू, मेरे मन तन होआ निहाल जीओ,
दीओ दरस आप नारायण, अगंम रूप धारेआ॥
मेरा सोहणा सतिगुर सांई, सुंदर रूप निराला जीओ,
दर्शन जाऊँ बलिहारे तिनके, बांह पकड़ जिस तारेआ॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

भले चंगे प्रितपाल ठाकुर जीओ, तुझ बिन कौण जाणे हरि राय॥
या यकीन यकूब या मुहम्मद अल्ला राम रहीम॥
या जानणहार प्रभ दीन दयाल तुझ माहि समाई॥
या हक्क यकीन रख प्रभ सुखदाई, देओ हरि नाम पिआरे॥
या हक्क नूर समाधी अंतरयामी अबिनासी,
दर्शन दास तेरी शरनाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

महादेव गुरू ब्रह्मा विशनूँ,
गुरू जगत जननी माई।।
जुगां जुगंतर थान थनंतर रह रवै गुरदेवा।।
सुझये गुरमुख रज़ा पाई,
दर्शन प्रीत गुर चरनी लाई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मिठ बोलड़ा हरि हरि हरि हरि साजन मोरा।।
बिन साजन नाम ना पावे, बिन साजन सहज ना समाये।।
बिन हरि हरि बाणी ना समाये तूँ सभनी थांई।।
नर नारायण नर निरंजन, दर्शन अगंम माहि समाई।।
तुझ बिन नाही कोये जाणे, हरि गुरबाणी तूँ सभनी थांई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेहरबान मेहरबान मेहरबान, दीन दयाल मेरे मेहरबान॥
मेरे सतिगुर पुरख सुजान हरि राय, तूँ ठाकुर प्रितपाल गोसांई॥
हउँ गरीब किछ जानो नाहीं, तेरी महिमा अपरम्पार॥
तूँ बख्शंद बख्शणहार, आपे तारे तारनहार॥
चिंता मिटी सभै पूरन काम, जब ते लायो तेरा धिआन॥
तन मन धन तुध शरनी लावां, किरपा रहमत तुझ ते पावां॥
मन की बूझी तूँ सुलतान, दर्शन दीआ मोको गुज़रान॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मुकटधार गिरधारी मुरारी, मीरा भई दिवानी दानी,
दाना भयो रखवारी॥
मैं मन माने सच सरबत्त, साध संग सिदक शहादत तांही॥
होये दयाल कलि माहे निरंकारा,
दर्शन नर निरंजन गुरदेवा जोत चलाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मुझ महि तुझ महि भेद नाही, तुम भयो खसम हमारे।।
जीअ दान दया कर भगती लगसां,
ब्रह्म भरम मन लेओ छोडाई, मन विशटा संग प्रीत जोड़े।।
काम क्रोध लोभ मोह हंकार,
गढ़ मंदर मान संग दीओ पँच पिआर।।
परमेशर प्रधान नानक हउँ जाउँ कुरबान जीओ।।
बारिक प्रीतम तेरे बैकुंठ दरगहि दर्शन परवान जीओ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरा गोबिंद सुंदर मैं खड़ी निमाणी॥
तुध संग लगसां सुहागण होवां, पिर मिले कंत सहेली॥
हम नीच किआ जानो तेरी वडियाई, अति ऊचा तेरा सेवादारा॥
राखो लाज जीओ मेरे ठाकुर, मेहर करो सतिकरतारा॥
मन चित्त आवे सिमरां नाम, दर्शन भवजल पार करो॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरा माण भी तूँ, मेरा ताण वी तूँ, मैं तक्की ओट तुमारी जीओ।।
आपना नाम मुझ को दीओ, तन मन धन सभ अरपन कीओ।।
भुल्लां चित्त ना धारेओ जीओ, बख्शणहारे बख्श लीओ।।
तुध संग प्रीत हमारी जीओ, अपने चरणों में रख लीओ।।
मेरी बिनती करो परवाण जीओ, दर्शन तोसे कुरबान जीओ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे सतिगुरू सभना टेक तुमारी,
पूरन पुरख पारब्रह्म राखो पैज हमारी॥
गुरू गोबिंद गुरू इक दाता, आपे ठाकुर पूरन विधाता॥
हरि नारायण हरि जन आपे,
हरी हरि हरी हरि सुआमी, गुरू नानक प्रभ पूरा डिट्ठा॥
दर्शन जन करे बेनंतीआं, सतिगुरू नाम देओ नाम दानी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे ठाकुर गोबिंद राम जीओ, हम सभ ठहिरे भिखारी॥
पंखेरू बिन पंख उड जासी, मन लोचै शरण तुमारी॥
संत सजन संग सेव कमावां, प्रभ जीओ दया मेहर करीजै॥
राखो शरण आपणी मेरे सतिगुरू, दर्शन नीच को नाम दान दीजै॥
(यकीन)

(दोहा)

मेरे साजन सोहणे सुहेलड़े,
तूँ सभनी थांई जित्थे हउ जाई॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे ठाकुर भयो किरपाल जीओ,
दरस भेटत मन होवे निहाल जीओ॥
एको बसत बाणी गुर जाण, कर सेवा जप मिले नाम दान॥
सतिगुरू नानक पूरन भगवान, गुर आपणे निरभौ निरवान॥
दर्शन दास की सुनहो बेनंती, साध संग देओ मेरे पुरख सुजान॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे ठाकुर राम गोपाल, नानक गोबिंद कलि माहि अवतार॥
प्रथमे केवल नाम अधार, संत सजन संग कीजै पिआर॥
एह बिध तिनहें जाणें, जिनहे हरि रंग माणें॥
दरस देओ मेरे राम पिआरे, दर्शन कूकर नित्त दिन पुकारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे रामा मेरे कृष्णा मेरे नंद गोपाल,

देओ प्रीत चरणाये मेरे ठाकुर दातार॥

धन धन धन धन धन निरंकार,

नानक गोबिंद गुर संत सजण देओ दान॥

करां बेनंती हरि आपणे दास धरम करो परवान,

दास दासन सेव कमावे करते करीम नानक भगवान॥

नैन तरसन दर्शन कओ दरस देओ कृष्ण सुलतान,

आदि भवानी जुगादि हो जावे, बोल गुरू गुरबाणी समान।।

डंडौत बंदना अनिक बार, करां सचखण्ड नानक धाम।।

हुकम होवे जां पारब्रह्म, बाहर हुकमे ना जान।।

बांधी छूटे ना दास की, जित जित तुझे धिआन।।

दर्शन करे अरजोई तुध आगे, देओ दान मेरे मेहरबान।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरो राम रमईया तेरा अंत ना जाणा,
तूँ ठाकुर सरब कला तूँ आपे सरब समाणा।।
संत संग मन हरि रंग राता, तूँ मात पिता पुरख बिधाता जीओ।।
मेरे सुआमी गोबिंद गोसांई, बिन नामे जनम बिरथा जाई।।
तुम बख्शंद सेवक अपने साहिब जीओ जे तुध नाम धिआई।।
सिमर नाम प्रभ गोबिंद ठाकुर जीओ भवजल पार उतर जाई।।
हादरा हदूर अनहद बाणी, एह मन भाई एह मन गाई।।
दर्शन दास दरस दीजे, गुरू नानक दास मेरे सांई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं तेरे गुण गावां, जो मांगूँ सो फल पावां॥
काटो बंधन मेरे काटनहार, बख्शो पाप मेरे पालनहार॥
तूँ मेरे ठाकुर गोबिंद पिआरे, जाऊँ कुरबान मेरे राम पिआरे॥
बंदना करां तुध आगे मेरे नानक, देओ दर्शन सोढी पिआरे॥
होवे परवान जे करां अरजोई, दरस देओ मेरे राम दुलारे॥
राम राम सिमरां मैं नाओ, दर्शन दुख काटो हमारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

रे मन अनहद शब्द पछाण,
राम नाम की धुन निस बाजे, आठ पहर सुबह शाम।।
गुर के पास मन को कीनो कोट पराध जिस हर लीनो,
गुर पे आस गुर की ओट पूरण सभहि काज।।
आप मिलावै सतिकरतार, गुर जब भयो दयाल,
गुर की सेवा उत्तम सेवा, मिले दरगाहे माण।।
मन तूँ छोड सभहि चतुराई, गुर भगती कर नाम कमाई,
दर्शन कर कर गुर आपने के भवजल उतरेओ पार।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

लाल दीजै हरि नाम दातारै,
पूरन पारब्रह्म आदि पुरख मुरारे॥
एह जाणे तुझे ताही मन माने,
अटल चली जोत निरंजन॥
मोह ममता सभ छूटे,
दर्शन करम कमावां॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

यशवंती सहकार लावां

(पहली लांव)

पहिली लांव प्रभ पढ़ेओ पूरण करेओ काज।।
सतिगुरू नानक दयाल माहि मेरा मन तृप्त अघाई।।
अंतर की गति तूँ ही जाणे मेरे ठाकुर राम रघुराई।।
तुमरे काज तुमही साजे मोहे नीच किआ चतुराई।।
तुमसे हरि मिलेआ सोई जिस नामे लिव लाई।।
दर्शन की लाज रख लीजो आ गयो तओ शरणाई।।

(दूसरी लांव)

दूजी लावैं तन मन धन संग वसेओ हरि राय।।

मेरे ठाकुर ठाठ रचाया,

साधू संग हरि प्रभ पाया।।

मिला नाम प्रभ मुक्त अधारा,

नाम संग प्रभ कीओ पसारा।।

सगल जीव के दाते सुआमी,

हर थांओ वसे मेरा प्रभ अंतरयामी।।

गुरू नानक साहिबों के साहिबा,

दर्शन दास होआ दासन को दास।।

(तीसरी लांव)

तीजी लावैं दुख सुख सांझा किरपा तुमरी निभेओ साथ।।
एको संग सुहागण जोती जोत समाये,
ठाकुर ठाठ रचाया वर पाया हरि राय।।
मिले शब्द संग साध पिआरे, संत राम जग माहि निआरे।।
गुर आपणे संग जपावे हरि नाम, सिमर प्रभ भयो मेहरबान।।
सुख मन सुख अमृत देओ दयावान,
तन मन गुरू धन पूरब पुरख सुजान।।
हरि राख लेओ जन अपणे दर्शन राम एको जाण।।

(चौथी लांव)

चौथी लावैं पती पत सेवा राखो लाज पैज नानक साहिबा।।
सो सुहागण मेरे सतिगुरू जो प्रीतम पिआरी।।
नाम सिमर हरि आपे सुआमी, गुरमुख लेखा गुरू दिखानी।।
सेवा सिदक राखो हरि मन, सो नार दरगाहि समाणी।।
ना वैर ना आपे तापे देखे, तिस दर्शन जन बलिहारी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

विसरै ना मन प्रीत तुमारी,
कोट कोटन में एक तूँ दाता, हउँ जाऊँ बलिहारी।।
दर्शन की मन जागी तृष्णा,
नाम की मोहे दीजो भिक्षा, कोटि कोटि उपकारी।।
मोहे दीजो गुण गुणी निधान,
किरपा करो मेरे मेहरबान, मैं आयो शरण तुमारी।।
हम नादान है अनजान,
तुम हो पूरन पुरख सुलतान, तेरी महिमा निआरी।।

(यकीन)

धन
नानक

पँचमणी

धन
नानक

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अभिमान तिआगो भाई, प्रभ मिलणे की बारी आई॥
कर शुकराना गुरू आपने का, जिस एह बिध बणाई॥
लोभ करत लोभी होवे, नाम सिमर मन उजवल होवे,
सेवा उत्तम करम कमाई॥
जोड़ के तिनका तिनका बंदे, सोहणा सुंदर महल बणाया,
मन का मणका तूँने ना फेरा, ना गिआन का दीप जगाया,
किओं ना हरि सिओं नेहु लगाई॥

जिओं चले ना बेड़ी बिन पतवार,
तिओं होवे ना गुर बिन भवजल पार,
मन गुर संग लगन लगाई॥
अब की बारी करम कमाओ, बिन मांगे सरब सुख पाओ,
संग हरि के दर्शन पाई॥

(यकीन)

(दोहा)

इक्को मिट्टी दे बणे इनसान सभ के दाता श्री भगवान,
ना कोई हिंदू ना इसाई ना कोई सिख ना मुसलमान॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अवर नाही तुध जेहा कोई दाना, शांत मुगध शाहे सुलताना।।
दे के आपे ताजो तख्त, आप गरीब सदाना।।
सेवक की तूँ राखें पैज, गिरे असमान चढ़ाना।।
डिट्ठा सब जग नाम बिना वीराना, नाम देओ मेहरबाना।।
मैं किछ नाही बेसुर बेताला,
दर्शन करो किरपा खोलो मन का ताला।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

आतमिक गिआन करम नही कोये, नाम जपत मुक्त होये।।

धरम सथानी ना मिला सुआमी, ना ओह मिलेया धरम ग्रंथां,

ना ओह तीरथ पाईदा।।

आत्मा अते परमात्मा, गुर मेल मिलाइंदा।।

अंत काल ना संग जासी, दर्शन नाम जपेओ प्रभ अबिनासी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

आण पड़े जो तेरी शरणी, सफल तिनहां का जीवन होये,
तेरा कीआ सभ तों उत्तम, हर कारज तूँ आण खलोये॥
आपे करता करे संभाल, आपे लायो प्रेम पिआर,
आपे जोड़े आप संजोये॥
कित थांओं आये कित संग जाये, देस पराया कित नेहुं लाये,
तूँ जाणे ना बूझे कोये॥
ओह वेला है सदा सुहेला, कंत पाइये जब दर्शन तेरा,
दीजै दर्शन मोहे॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

एको ओट तुमारी दाता, अवर नाही को दूजा,
अंतर की गत तुम ही जाणो, बिनती सुणो बनवारी॥
मीरा लागी लगन अति भारी, रोम रोम महिं नाम समारी,
जहर पिआला अमृत होआ, राखी पैज तूँ गिरधारी॥
भगत सुदामा गल नाल लाये, चरण धोये संग सिंघासन बिठाये,
होये किरपाल प्रभ जाये बलिहारी, दीओ कुल्ली गुल्ली किरपा धारी॥
मोहे बख्शो नाम निधान, ओ मेरे साहिबा पूरण भगवान,
दर्शन नदर करो प्रितपाला, पूरी कीजो आस हमारी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

एक नूर ते नूरे इलाही, नर माहि तूँ समाही,
एक नूर ते जोत अगंम है नर नारायण भेद नाही॥
अंतर निरंतर राम नाम भै भरम छूट जाई,
दर्शन दास दास भयो मेहर नदर करेओ ठाकुर गोसांई॥
एक नूर ते अगंम माही, दर्शन सच तूँ सभनी थांई,
तूँ मेरा ते मैं तेरा तुझ में मुझ में भेद नाही॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर आप दयाल भयो तां हरि नाम जपेसां।।
साधू संगत हरि निरमल तां गुरू किरपा करेसां।।
राखनहार रहेओ निआरा, वसहि दूर परदेसां।।
करो दया नाम दान, दर्शन दास अरज करेसां।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर साजन सनेंदड़ेया, संत साजन देओ दान॥
भयो तृप्त मन मोरा, हउँ गरीब हमे दुख घनेरा॥
लाल रंगीले प्रितपाल हरि राय,
तुझ बिन जीआ मर जाये हरि राय॥
हरि नाम देओ हरि नारायण, नर नारायण दोनो महि भेद नाही॥
तुझे धिआया सुख घनेरा पाया, मेरे हरि राया॥
हउँ जिथे जांई तेरे गोसांई तेरे गोसांई,
दर्शन अगंम गोसांई हरि राया॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर सेवा मिले वडभागी, जां गुरमुख मन चित्त लावे॥
हरि निरंतर वसे अबिनासी, कोई विरला कार कमावे॥
हरि दास जपेओ अनहद बाणी, मरन जनम दुख सभ नासे॥
दर्शन करे बेनंती प्रभ तुध आगे, नाम दीजो मुक्त के दाते॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर करे सतिगुर करो सतिगुर करनेहार,
मानस के हथ किछ नाही, जो करे सो करतार॥
जीव जंत भयो पुनीत, हरि को गावे सहज सभ गीत॥
करने को किछ नाही, आपे आप करने जोगा,
हरि को हरि ही जाणे भरम भौ सभ लोकां॥
सुणो बेनंती करे जन तुमारा,
बिना सतिगुर कलि महि कौन पार उतारा॥
दर्शन दास होआ दासन को दास, हरि पूरी कीजै मन की आसा॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर पूरन पुरख हमारे,
मोहे नाम दीजै ठाकुर दातारे॥
हरि नामै मन उपजी प्रीत, मैं ना जानो तेरी प्रतीत॥
तुमरे हमरे एको सांझ, किरपा करो सिमरां नाम॥
दीन दयाल दुख काटो हमारे,
दर्शन नीच आया दुआरे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सतिगुर मेरे प्राण अधारे तुध पे हउ जाऊँ बलिहारे॥
किरपा निधान किरपाल प्रभ ठाकुर, अवगुण ना चितारो हमारे॥
गुण गिआन गुर शब्द दीजो, हम मांगते भीख प्रभ भिखारी तुमारे॥
आवण जावण जगदीश सुआमी, काटो फंधा आपनी किरपा धारे॥
दर्शन जन जप जप जीवे, गुर शब्द प्रभ तुध सहारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(श्लोक)

सभ किछ मिला तुमहें दान में, किआ है तेरा पहचान रे॥
पूजा पाठ करम है तेरा, फिर काहे का गुमान रे॥
किस बात पे तूँ माण करें, पहले खुद को खुदी से निकाल रे॥
खाना पीना सभ ईश्वर दीआ, यह सवास उधारे हैं जान रे॥
सांसों की डोरी प्रभ के हाथ, ना किछ तेरे पास रे॥
तूँ है खिलौना तुझे हरी ने बनाया, तूँ हरी का करले धिआन रे॥

तुझ पे किओं मेहरबान है दाता, इस बात को तूँ बिचार रे॥
सभ का सिरजनहार सवामी, वो है बड़ा दयावान रे॥
सभ को देता वो देवनहारा, फिर काहे तूँ बने नादान रे॥
दर्शन कहे सुन मन चँचल, इस मैं को तूँ तिआग रे॥

(यकीन)

(दोहा)

हउ कलि माहि नाम बिना नाही पार उतारा॥
हरि भगतन निरभौ नाही मोह निरवैर॥
नाम वसावे हिरदे अंदर दर्शन ना जमदूत सतावे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सभ थां सोहणे मनमोहन पिआरे॥

तेरा रूप सुंदर सोहणा, जो वर मांगे सो फल पावे॥

आप सहाई होवे ठाकुर तेरे जनम जनम गुण गावे॥

तेरी संगत उत्तम शरणागत, सास सास नाम धिआवे॥

मेरे सुआमी राखो सिर हथ,

दर्शन जन सतिगुर चरणी लिव लावे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

शरन पड़े दोये हथ जोड़, सुन लो अरज़ हमारी।
दीन के दाते पुरख विधाते, राखो पैज हमारी॥
दया कीजो दया के सागर, मोहे दीजै नाम खुमारी।
तेरा कीरतन किरत कमाई, निरमल बाणी भवजल तारी॥
राखो लाज गरीब निवाज, कलह कलेश दूख निवारी।
जीहवा गावे तेरी महिमा, कीजै किरपा किरपाधारी॥
सेवा सिदक दीजै ठाकुर, मन तन लायो प्रीत तुमारी।
दर्शन मांगे तेरी रहमत, पूरन होवै आस हमारी॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

साहिब आपने की करो चाकरी, सभहि छोड चतुराई जीओ॥
आपे आपना खेल करायेंदा, सेवक को दे वडियाई जीओ॥
दया करो मोहे नाम दीजै, मेरे सतिगुर गोबिंद गोसांई जीओ॥
चकोर चँद सिओं प्रेम जैसे होवे, तैसी प्रीतम प्रीत हमारी जीओ॥
दर्शन कहत सुनहो साधो, गुर बिन मुक्त ना पावै कोई जीओ॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सुणो अरजोई दीन दयाल, दीजो गुण मोहे गुणी निधान।।
सेवा सिदक दीजै मन को, धिआवै निस दिन नाम।।
पँच दुष्ट वस कीजै, हिरदे करो प्रभ वास।।
चरन प्रीत दीजै जन को, दर्शन की लागी पिआस।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हम करने आये लोक भलाई, दुख हर सतिगुर नाम धिआई॥
करम धरम एको कीने, गुरदेव संग प्रभ होवो सहाई॥
राज ताज तुझ मोहे दीनो, दासन दास सुणी अरजोई॥
राखो शरण आपनी ठाकुर जीओ, पूरन पुरख बणत बणाई॥
आपे हरि पूरे परमेशवर, दर्शन दास राखो शरणाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हरि जीओ किरपा करो, आपना नाम देओ मेहरबाना,
नाम जपत होसी मोहे मन शांत।।
बिना गुरू हरि ना मिलेया भाई,
नाम बिना हरि जानेया ना कोई।।
एक नाम उत्तम हरि का, हिरदे वसे नाम प्रभ तांका।।
दर्शन दास को हरि होर कोई नाही,
दास जनो के कारज आन आप खलोआ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

कंत कामन मेरा सोहणा सुंदर राम रमईया॥

सुणां गुणां गुणिआई चार, तेरी महिमा अंत ना पारावार॥

मनमुख धृग जीवणा, मरन जनम वारो वार॥

गुरमुख मुख उजवल, सुख देहु सतिकरतार॥

सच बोलणा सच कमावणा, सच तपसिआ सच सहज,

दर्शन कहे मेरे मेहरबान॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

काज सवारे भगत जनो के, राखे पैज राखनहारा,
आपे वंडदा नाम भंडारे, सुख देवे सतिकरतारा।।
नदर करे सभ उत्तम होवे, चहुँकुँट करे उजिआरा,
भले बुरे नाही जानत, सच का सदा करे वपारा।।
बाहर ढूँढे भीतर न जाये, भीतर बैठा सिरजनहारा,
जो जन सिमरे मन चित्त लाये, गुण गिआन देहु अपारा।।
जो समझे और करे धिआन, दर्शन पावे ब्रह्म गिआन,
मोह माया सभ झूठे बंधन, गुर संग छूटे सभ विकारा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

किरपा करो मोहे दरस दीजे, मेरे सतिगुर पुरख बिधाते।।

दीन दयाल होवो सहाई, सिमरे नाम तुमारा जीओ।।

तूँ दाता तूँ अंतरयामी, साजन सुख निहारां।।

तेरी माया तूँ ही जाणे, तुम वड्डा ठाकुर हमारा।।

दर्शन नीच को प्रभ मिलेओ, प्रभ आपनी किरपा धारा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

किरपाल किरपा निधान करमयोगी करमदाते, देओ नाम सुजान।।
दयाल होआ जन अपने, कीओ तिनहे परवान।।
नाम धिआवां परम सुख पावां, सतिगुर पुरख सुजान।।
नानक प्रभ अपना सिमरां, देओ दरस प्राण अधार।।
राख लेओ ठाकुर गोबिंद दर्शन कहे पुकार।। (यकीन)

(दोहा)

गुर संग प्रीत जो जन करे, तिनहे जम ना डरावे ना मारे,
अब तब सभ जानो हरि राय, दर्शन मुक्त शरण प्रभ पाये।।
(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

घट घट वासी प्रभ अबिनासी, अजब तेरी एह माया,
कोये ना जानत कोये ना समझत, कठिन एह खेल रचाया॥
करन करावणहार तूँ दाता, तूँ समरथ तूँ पुरख विधाता,
सभ माहें तूँ समाया॥
तूँ सागर तूँ हीरा कंचन, तूँ शीतल तूँ कोमल चँचल,
हरि रूप वटांदा आया॥
जीवन दान तुध ते पाया, दर्शन नेह तुध संग लाया,
राखो लाज हरि राया॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

घट घट वासी प्रभ अबिनासी, बख्शो नाम पिआला,
प्रीत कीओ तुध सिओं तेरा सुंदर रूप निराला॥
शांत सीतल चेतना पिआरी, कर किरपा प्रभ दीन दयाला॥
कंचन काया कोमल हिरदे, बख्शो जोती होवै उजाला॥
नाम दान दीजै जन अपने, होवै दर्शन जनम सुखाला॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जग जीवन दाता मिले संजोगी, सतिगुर मेल मिलावे।।
अनंत बेअंत महिमा उसदी, बेद कतेब ना समावे।।
गुरू नारायण निरंजन मसतक, अनहद नाद वजावे।।
गुर गिआन मिले वडभागी, धुर लिखेया लेखा पावे।।
दर्शन दास करे डंडौत बंदना, किरपा करो हरि राय।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जगत खेल मन ना लगसे, तुध किरपा नाम धिआवां॥
मेरे सतिगुर कीजो मेहर, तेरे सदा सदा गुण गावां॥
तेरी सोहबत तेरी संगत, तेरा संग है सच्चा,
रिशते नाते तों वी गहरा, तेरा रंग है पक्का,
मैं रंग तेरे रंग जावां॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जनम दीओ संग दीओ गुजरान, नाम भी दीजो किरपा निधान।
नाम जपेआं मन उजवल होवे, जिन भेटेआ जाणे जन सोये,
अंतर उपजे गुण गिआन॥
देह सेवा संतोख सिदक सहारे, मैं कार कमावां दिन रात पिआरे,
राख लेओ प्रभ मेरा मान॥
मेरी अरज सुणेओ सवामी, जान लेओ प्रभ अंतरयामी,
दर्शन धिआऊँ निस दिन नाम

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जिसने खोजा उसने पाया, हिरदे अंदर नाम वसाया।।
पूरन पुरख अचुत अबिनासी,
अगंम रूप हरि सचखंड वासी, किसे विरले भेद पाया।।
हरि संग प्रीत गुर संग नाता,
पूरण गुरू गुणी गुणिअंता, जिसने राह दिखलाया।।
गुर की टेक गुर की ओट,
इच्छा पूरन ना आवे तोट, दर्शन कंत लिव लाया।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तन मन धन तुध आगे पिआरे, जनम मरण छूट जावे॥
जपत शपत तपत हिरदे ठारे, तुध पैरी प्रीत समावे॥
राख साक सभ जीवत जीवां, अंत रास साथ ना आवे॥
दर्शन दया दीना नाथ कीजो, डंगो डंग कार कमावे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तरस भया सतिगुर को हरि नाम दीओ, नाम जपत सभ दुख नाठे।।
भरम भयो भयो दीवाना, दान देह का दान नाही।।
तूँ सभनी थांई, तूँ सभनी थांई, जग माहि मन माहि।।
(यकीन)

(दोहा)

तुम दान देओ हरि भगतन को हरि राय,
तुम दयाल भयो हर पुरखन को हरि राय।।
दया करो दीन दयाल बिधाते, हरि दर्शन संग मन हरि रंग राते।।
(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुझ बिन दुख घनेरे सहने, राम दयाल पुरख साजनड़े सुहेले,
भयो तृप्त सतिगुर मेले॥
सच सरबत्त साध संगत सिदक शहादत, दास धरम माहि समाये,
सो दास दर्शन मुख बोले, मेरे साजन सोहणे सुहेलड़े॥
तूँ सभनी थांई जिथे हऊँ जांई, दर्शन अगंम गोसांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुम मेरो गोबिंद ठाकुर दातार, हम ना जानो तेरी वडियाई॥
बेअंत अंत ना पारावार, आपे साजे सहज निवाजे,
ईहां ऊहां करतारा॥
दुख सुख राख राखणहारे, देओ नाम मेरे नानक दास पिआरे॥
तुध आगे अरदास हमारी, दर्शन कूकर गुण गावे निस तेरे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ सभनी थांई तुझ देखे मन मान जाई॥
मन महि मोह ममता माया,
एह सभ फीके बिन हरि राया॥
तुझे धिआया सभनी थांई पाया,
तेरा अंत बेअंत बेअंत, बेअंत बेअंत हरि राया॥
देख दीद दीन दयाल दीना नाथ,
दर्शन मुख एह सुहाया हरि राया॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ साहिब मैं तुमरो दासा, पूरी कीजै मन की आसा।।
तूँ ठाकुर हम चाकर तेरे, बख्शो प्रभ अवगुण मेरे,
बिन नामे मन पिआसा।।
नीच निमाणा हउँ करमहीण, दीजो गुण गुणी गहीर,
कीजै मेरे हिरदे वासा।।
सुणो बेनंती प्रीतम पिआरे, दीजो दर्शन मीत हमारे,
मेरे पुरख बिधाता।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ साजन तूँ हरि प्रभ पूरा, मोहे भयो दयाला॥
मेहर करो प्रभ जन आपने, पूरी होवे मन की आसा॥
हम नीच किछ जानो नाही, तुम भयो मीत हमारे॥
दर्शन दास मन चाओ लगा है, नाम देओ मोहे पुरख मुरारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ ही मेरा सजन पिआरा, तेरे नावें जनम हमारा।।
तेरे संग भौ ना लागे, दुष्ट दैंत जायो भागे, तूँ कष्ट निवारणहारा।।
तूँ मेरा शाहु अत्त ऊचा दाना, नाम धन देवहु नाम निधाना,
तूँ करन करावणहारा।।
हम पापी तुम बख्शणहार, दया मेहर करो करतार,
दीजो आप सहारा।।
तेरी किरपा हो तेरा सहारा, दर्शन जन फिर होवे निआरा,
चमके जग सितारा।। (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ ठाकुर मात पिता हमारे॥
मन मोह तब छूट जाये, जां सतिगुर किरपा धारे॥
गुर की सेवा नाम कमावां, सतिगुर आपणे बलि बलि जावां॥
सिमर सिमर प्रभ आपणा, कोट जनम की मैल गवावां॥
गुर किरपा सुखी जन सोये, पारब्रह्म दयाल होये॥
गुरू गिआन प्रगटे तां जीवां, दर्शन प्रेम मिले तां थीवां॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ दाता पालनहारा, सतिगुर पुरख हमारे,
बख्श लेओ दीन के दाते साजन मीत मुरारे॥
बेअंत सुआमी जल थल महीअल, नाम देहु किरपा धारे॥
तेरी वडियाई तुध ते पाई, चरण कमल चित्त धारे॥
दुष्ट दैंत दामन सभै पावन पार उतारे॥
नर नारायण भेद नाही, दर्शन रंक पुकारे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ पातशाहों का पातशाह, सच्चा परवरदिगार,
नाम तेरे दी ओट जो तकदे, भवजल उतरे पार॥
तूँ आप करेंदा आपे करता, तूँ आप करणेहार,
तेरे भाणे विच जो रैहंदे, रंग चढ़े करतार॥
राज ना चाहूँ ताज ना चाहूँ, मांगूँ तोसे पिआर॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(प्राण पूजा)

तेरा नाम प्राण अधारा, प्रितपाल ठाकुर दातार जीओ॥

राखो लाज प्रभ जन आपने आपनी किरपा धारा॥

सुण सुण जीवां अमृत बाणी तेरी पालणहारा॥

मन मोह हउमै रोग काटो बंदना करां बख्शणहारा॥

दर्शन शरण देओ प्रभ मेरे, हाथ बांध अरज़ गुजारां॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तेरे सहारे मेरे राज दुलारे हरि राय॥
प्रेम भयो मन चाओ लागा है, नाम देओ दातार जीओ॥
बेअंत बेपरवाहो बेमुहताज बापरवाहो गोबिंद शरण तारे॥
हरि मेलहु सेव कमावे, जे मसोला किरपा धारे॥
खसम पिआला पीआ खसमाने, खिंन खिंन काज सवारे॥
दर्शन कूकर करे बेनंती, सुनहो सतिगुर मेरे पिआरे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तैंह हरि नाम जपेओ जिस उस ना दुख ना डर जम फाहीदा।।

जिस नूँ मन भावे तिस तिल समाये,

असां आस लगाये कब दरस होसी, मोहे राम रघुराई।।

तब करम कमाऊँ जब अमृत नाम फल पाऊँ,

तुध आवे खियाल मोहे होवो दयाल।।

मोको दीन जानो दर्शन राह बखानेओ, मैं तुध प्रीत लगाई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दयावंद दयाल पुरख खसम हमारे,
सोहणे सुंदर हरि राय, नाम देओ पिआरे॥
नाम वसा के हिरदे अंदर परमगत पाऊँ,
तेरा कीरतन सदा सुखदाई, तपदे हिरदे ठारे॥
हम गरीब किछ जानो नाही, दर्शन नीच ढहि पयो दुआरे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दास जनो को प्रभ भयो दयाल, दास जनो को प्रभ किरपाल॥
दास जनो की सुणी अरजोई, हरि की आसा हरि सेओं पूरी होई॥
दास जनो की सुणीये पुकार, प्रभ की महिमा अंत ना पारावार॥
दास जनो संग प्रभ होये सहाई, प्रभ की किरपा हम सभ तांई॥
दास जन सभ भयो पुनीत, हरि जन सेओं करेओ जो प्रीत॥
आप करे आपे कराये, आपे करनेहार,
दास की पैज राखे आपे पूरा प्रभ मेहरबान॥

नानक नाम सभहां तों उच्चा,
अगंम शब्द सुणेआं मनुख भयो सुच्चा।।
दर्शन नीच की सुणेओ बेनंतीआं,
प्रभ कीजे मोहे हिरदे वास।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(आस)

दीन के दाता गरीबों के वाली, रक्षा करो आप बण पाली।।
हउँ निरबल नीच निमाणा,
तुमरी उसतत करना ना जाणा, करे बेनती तेरे दर पे सवाली।।
तुध किरपा ते नाम कमाऊँ,
भवसागर से मुक्त हो जाऊँ, दास की बेनती कभी ना टाली।।
तूँ ही तूँ मन हर वेले बोले,
बावरे नैण प्रीतम को टोले, दर्शन दास करो आप रखवाली।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

ना चितारे अवगुण हमारे, तुम ऐसे मेहरबान॥
किरपा कीजै हम पे साहिबा, हम मूरख नादान॥
तुमही हो बंधू तुम सुखदाता, हो तुमही हमारे भ्राता,
दया करो दयावान॥
मात पिता तुम जीवन दाता, जनम जनम से तुमसे नाता,
ना बिसरे मन से नाम॥
आयो नाथ तेरी शरना, दर्शन बिपता तुमही हरना,
तुमपे है बहु माण॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(पदम पँचमणी)

(पदम पहला)

पँच सा पे सतिगुर सेवा, पँचम शब्द अनहद लेवा॥
पहले सा पे शहादत पावे, दूसरे सा पे सच कमावे॥
तीसरे सा पे सरबत्त दा भला, चौथे सा पे सिदक सरब कला॥
पँचम सा पे साध का संग, जन दर्शन प्रभ आनंद आनंद॥

(पदम दूसरा)

पँच सा पे जाऊँ कुरबान, पँचम आपे लागे धिआन॥
पँच सा पे उत्तम संगत, पँचम लाल लाल की रंगत॥
पँच सा पे उपजे प्रेम, पँच सा दाते की देण॥
पँच सा पे आवे गिआन, दर्शन जन को प्रभ का फुरमान॥

(यकीन)

(दोहा)

पतित पावन प्रीतम गोसांई, तुझ बिन साजनड़े मर जाई,
मरने से जग सभ डरेओ, तेरे भगत को भै नाही॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(पदम पहला)

पँच तन कीओ परधाना, पँचम को दीओ जुग जुग माना॥
पँच तन को मिलणे की बारी, पँचम माहि सोझ तुमारी॥
पँचम श्रेष्ट ना शास्त्र बेद, पँचम माहि ना तुमरा भेद॥
पँच यशवंती वसे पिआरी, पँचम शब्द सुरत नाम खुमारी॥
पँचम चौरासी रहे निआरा, पँचम उपजै प्रेम तुमारा॥
पँच सफल सेव कमाई, पँचम प्रथम महिमा गाई॥
पँच तीरथ अठसठि इश्नानी, पँचम गिआन गूढ़ गिआनी॥
पँच मोह ममता तिहारी, पँचम दर्शन जाये बलिहारी॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

पँचम बसत पँच विकार, काम क्रोध लोभ मोह हंकार।।
पँचम मन हुकम चलाये, पँचम जम जम चोटां खाये।।
पँचम जन दरगाहि सतिकार, पँचम बिन ना मुक्त अधार।।
पँचम छत्ती पदारथ बनसपत, पँचम रास सेवा सतिगुर।।
पँचम हरि प्रभ रहेओ भरपूर, पँचम धन नाद हादरा हदूर।।
पँचम हरि आपे रूप, पँचम हरि दर्शन पक्का सबूत।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

प्रभ सुखदाई सतिगुर दयाल,
साजन मीत मुरारे॥
नाम बिसार मर जाऊँ,
चरन कमल चित्त धारे॥
चौंह वरणों से इक वरण होसी,
दर्शन नीच पुकारे हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

प्रभ जीओ मैं आयो शरण तुमारी,
चिंता मिटै मेरे मन तन की, कलह कलेश निवारी॥
जाप ताप करना ना जानो, ना कीओ तीरथ धाम,
ना फेरूँ माला मणके, जब इनका भेद ना जाणी॥
देश बेगाना परदेसी पीआ, जग की रीत निराली,
साक संग सभ झूठे नाते, सच्ची प्रीत तुमारी॥
तूँ अंतरयामी मेरा सुआमी, कण कण तेरा बसेरा,
जल थल गगन तूँ सरब विआपी, दर्शन एह खेड निआरी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(शक्ति)

पीड़ पतित पावन प्रितपाल गोसांई,

तुझ बिन नींद नैनण ना आये।।

देओ दरस प्रभ अबिनासी, पीड़ पूरे सतिगुर संग जासी।।

तुझे धिआया महां परम पद पाया हरि राया।।

पउड़ी पीड़ पूरे प्रभ दर्शन, अगंम गोसांई हउ तूँ मान जाई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

बंधन मुक्त हरि दर्शन कओ, दया दान हरि जन कओ॥
साधू संग जिस हरि हरि जपेआ, मुक्त भुगत जुगत गुर प्रसादि॥
तुध जाणेआ हरि मन मानेआ, मोह ममता छूट जाई॥
मुगध अगाध नानक, दर्शन प्रभ हर थांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(श्लोक)

बिन मांगे सभ किछ दीओ दीना नाथ,
मन की आसा पूरी करदा राखै दासन की लाज॥
ऐसा दयाल पुरख मेहरबाना, कोट कोटन में एक,
सभनां देवे देवनहारा, दर्शन धारे रूप अनेक॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मानस जनम पाया है तो मन की मैल गवा,
हरि से प्रीत लगानी है तो गुर की शरनी जा॥
पँच तन मिला हरि से, हरि से नेहा लगा,
प्रेम की बाती नाम का दीपक हिरदे अपने जगा॥
जीव जंत भी करते पुकार, दर्शन दीजो प्रभ हो के दयाल॥
मनमती तूँ किओं नहीं समझें मन को तूँ समझा॥
बारम्बार हाथ ना आये यह जीवन की घड़ीआं,
हर पल घटती जाये उमरीआ कुछ तो करम कमा॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मिठ बोलड़ा तूँ साजन पिआरा, जल थल महीअल तेरा पसारा।।
हवा मिट्टी पाणी अग्ग, सभ महि रव रहेआ निआरा।।
मन तूँ काहे फिरे अनजान,
बाहर ढूँढे मिल ना पावे पूरण भगवान।।
माटी के हम पुतले माटी मे मिल जाणा,
माटी से मिलेओ जीवन माटी मे है समाना।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेघ बरस मेघराज मेरे, अत्त ऊचे दास तुहेरे॥
सुख दीजै सहज निवाजे, राखो पैज मेरे राम राजे॥
निरगुण निरबान मेरे मेहरबान, मुक्त भुगत सुमत्त दीजै दान॥
मन माया संग प्रीत लागी, किरपा आपनी कीजै॥
दर्शन कहत कीरतन तेरा, तन धन मन लीजै॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरा साजनड़ा हरि साजनड़ा, बिन साजन किछ नाहीं।।
सिमरत नाम हरि उत्तम सेवा, आवागउण जम फंदा छूट जाई।।
तेरी रंगत लाल लाल रंग राते, कीरतन यश किरत कमाई।।
सतिगुर प्रितपाल मेरो, दर्शन दयाल प्रभ होवो सहाई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरा मन तृप्त अघाई, प्रीतम संग होई दूण सवाई॥
गुर किरपा ते मिले गुसईआं,
होईआं सभै इच्छा पूरीआं, पीआ मन भाई॥
सद सुहागण थीण पीआ चरणी,
हुकमे अंदर रज़ा मनणी, जिंना नेहु सच्ची लाई॥
हउमै मिटी तृष्णा बुझी,
दर्शन होईआं प्रीतां गूढ़ीआं, मन तन शरणी लाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(माण ताण)

मेरा माण भी तूँ मेरा ताण भी तूँ, मैं तक्की ओट तुमारी जीओ।।

नाम धिआऊँ हरि गुण गाऊँ, संत सजन के बलि बलि जाऊँ।।

तन मन धन तुध पे वारी, पूरन होवे आस हमारी।।

मेरी बेनती करो परवान जीओ, दर्शन तओ से कुरबान जीओ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे सतिगुर किरपा कीजै, मोहे नाम दीजै॥
तुम पे ओट हमरी, मो को नीच जान कर, अपनी शरण लीजै॥
मेरे भाग अति माड़े जीओ, इनसे छुटकारा दीजै॥
दया के दाता तुम हो ठाकुर, दर्शन की बेनंती सुण लीजै॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे गुरू गंभीर गुणिआर बिधाते, सतिगुर पुरख सुजान,
हम गरीब नाही गुण कोये, तुम दान देओ मेहरबान॥
जो तुध भावै समरथ दाते तूँ करते आपे करता,
बिन नाम ना छूटे दर्शन जम फासा॥ (यकीन)

(दोहा)

मेरे मन हरि प्रीत कर ऐसी, चकवी चकोर चँद जैसी॥
मन मेरे हरि जान ऐसी, गाँ धिआने बछड़े जैसी॥
ऐसा नाम जप मन मेरे, पँच दुष्ट भरम छूटे तेरे॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे पतित पावन पीआ मन भाये, हरि राय,
हरि राय हरि राय हरि राय तुझ माहि समाये॥
पीड़ ज़हर पिआला अमृत बण जाई, जे पीआ संग प्रीत मन भाई॥
तूँ ठाकुर बेअंत बिधाते तुझ बिन मर जाई॥
देओ सुमत्त सच सिदक साध संगत, सरबत्त शहादत होवो तुम सहाई॥
घट घट वासी प्रभ अबिनासी,
यामी यामी अंतरयामी दर्शन दास तेरी शरणाई, हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं गरीब दास तुमारा, तुझ बिन नाही अवर सहारा।।
मुझ में तूँ तां भौ केहा,
तुमरे रंग रंगा मोरा जीआ, तेरा रूप निआरा।।
हर पल मारग राह दरसाई,
नाम धन पायो युकती बताई, खोला मन का दुआरा।।
किरपा कीजै रहमत बरसे,
मिलणे को मेरा जीआ तरसे, होवे दर्शन तुमारा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मोहे आपणा नाम देओ, जां तुध भावे सतिगुरू।।
तेरी मेहर तेरी दया, तूँ सभ का सुआमी जीओ।।
तेरा रूप तेरा रंग, तेरा खेल रचाया।।
गुर बिन रूप रंग सभ फीके, हरि बिन फीकी सभ माया।।
हरि की सेवा उत्तम सुण भाई, हरि की सेवा होवे सफल कमाई।।
नाम धिआइन हरि गुण गाइन, आठ पहर अराधी।।
दर्शन कहे सुण हरि मीता, हिरदे आण वसेओ मेरे चीता।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

राम सिमर मन मेरे शब्द अघाई,
मुक्त जुगत सतिगुर नाम सेवा पाई।।
सरब निधान सरब विआपी ठाकुर दाता,
सच रास तेरी भगत कमाई।।
जाप ताप संताप से साहिब तेरा सेवक निआरा,
धरत पाताल कीओ चहुं कुंट गगन रुशनाई।।

आदि नारायण मेरे जगदीश सुआमी,
हरि भगती मारग राह दरसाई॥
जन दर्शन तेरा दास भयो,
तुध किरपा ते मन मैल गवाई॥

(यकीन)

धन
नानक

चिंतामणी

धन
नानक

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

उडण पंखेरू बिन राही, राह दरसावे केहड़ा,
तरन समुंदरीं डड्डू मछीआं, ना पंथ ना डेरा॥
रखण लोकी कुत्ते बिल्लीआं जात पात न झेड़ा,
रिश्ते नाते लहू दे जानण, पाले ना को बंदा तेरा॥
तक्क के तेरी महिमा दाता, लोचदा ए मन मेरा,
दर्शन दास जाने एको, सभ थां जिसदा बसेरा॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अब मुझसे रहा ना जाये, जब से तुमरे दर्शन पाये।।
जंगल जंगल ढूँढे जोगी थक्क हारे,
झलक दिखादो मोहे प्रीतम पिआरे।।
रैण ना विहावे चैन ना आवे, तुध बिन मेरे प्रीतम हरि राय।।
मोहे बता दो पिआस मिटा दो, किंन बिध मिलोगे राम पिआरे।।
नैना पिआसे बिरहा दे मारे, चिंता चित्त नित्त सतावे।।
दर्शन दास दासन को दासा, सेवा सिदक नाम सहारे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

अवर किआ लोचे लोच प्रभ दर्शन, जिस संग होसी तेरा उधार,
नाम की दात मिले गुर शरणी, नाम सहारे भउजल पार।।
सेवा साध संगत की कीनो, होसी दरगाहे परवान,
भयो किरपाल प्रभ आपे, जब लागे सिमरन धिआन।।
काम क्रोध लोभ मोह हंकार, मन की मैल हउमैं विसार,
पँच तन संग आप करतार, सिमर ले सच्चा हरि का नाम।।
जनम अमोलक हीरा पाया, गुर के बिना निगुरा कहाया,
शरण प्राप्त गुर की कीनो, दर्शन मिलसी नाम दान।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सजन सुंदर मनमोहणे नूँ दे सुनेहा मरदन,
तुध बिन मरदन मर जाई, तुध बिन मरदन नाही।।
मरे मोहे मन हउमै रोग, रोग बिना नाही वियोग,
जिस मन गुरू वियोग, ऊहां मुक्त जुगत,
सुमत्त गुरप्रसादि लये, तूँ सभनी थांई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सवास सवास प्रभ नावैं लाइऔ, अंत काल फिर ना पछताइये।।

एह जीवन अनमोल है भाई, अंतर झात मिलेगी खुदाई,

हरि ए सच्च सच्च मन च वसाइये।।

सोहणे महल मुनारे ना रहणे, संगी साथी सभ छड जाणे,

धन दौलत सभ वसतु पराइये।।

लेखा जोखा पवेगा देणा, किओं सोवत गवाये रैणा,

नाम धिआ के करम कमाइये।।

आतम रो रो करे पुकार, किओं भुल गेओं तूँ दातार,

दर्शन गुर कोई ना सहाइये।।

(यकीन)

(दोहा)

सति संगत गुरू की हरि पिआरी,

जिन हरि हरि नाम मन भाया,

जिन सतिगुरू सतिसंग ना पाया,

सो भागहीन पापी जन आया।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

साध संग हरि उत्तम संग, वडभागी विरला को पावे।।
सिमरत सिमरत झूठी माया, मन मैल ना जाये।।
आपने आपने सुख भालते, साक संग सभ मीत।।
नाम बिसारे दुख पांवदे, शांत ना आवे चीत।।
डिठ्ठे सभहि आसरे जीओ, अंत सभहि छड जाण।।
संत संग ना छूटेओ बेद कतेब फरमान।।
राणा रहेओ ना रंक खाको खाक मिल जाण।।
दर्शन दास करे बेनंती, मेरी आस पूरी कीजे शाह सुलतान।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

सुण बेनती मेरी प्रभ किरपाल, गुर किरपा ठाकुर भयो दयाल।।
तूँ ही तूँ हर थान सजाये, तूँ ही तूँ हर मांहि समाये।।
तुध बिना फीके सभ माहि, तुध बिना कैसे जीवां मैं हरि राय।।
मैं मैं करता जग बंधा जीओ, दर्शन बिना तेरे कैसे जीवां जीओ।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

शरण पड़े दोये हथ जोड़, सुण लो अरज हमारी,
दीन के दाते पुरख बिधाते, राखो पैज हमारी॥
एको ओट तुमारी दाता, अवर नाही को दूजा,
अंतर की गति तुम ही जाणो, बिनती सुणो बनवारी॥
दीन के दाते, दया के सागर, एह सभ तेरी वडियाई,
दयाल होवे जन आपणे मेरे राम रघुराई॥
बख्शो मोहे अमृत नाम मेरे पूरण भगवान,
दर्शन मांगे तेरी रहमत कर पूरी आस हमारी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हक्क पराया जो खावे ओह पापां दा अधिकारी,
दान पुन्न से मिले ईआं उआं सोभा भारी॥
जिनही दीओ जनम तोहे दीओ पदारथ संग,
खाये खाये थक्क हारे तूँ ओह देता ना हारे॥
संग तिनहां दा करीये जो सच्च दा राह दिखलावे,
पापी संग ना चलीये पापां दी गंढ भारी॥

धरम नूँ जानो धरमी बणो ना करो बहु चतुराई,

दर्शन कहे यह जनम बहुमुल्ला रे भाई।।

कहे दर्शन सुणो रे संतो धरम ने दुनिया तारी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

हरि के बंदे हरि किओं भुलायें, करें चतुराई बहुत दुख पाये॥
कर बंदगी तेरे काम आये, जमपुरी से तुमहे छुडाये॥
मैं मैं करता मैं ना मारें, मैं के कारण राम बिसारें॥
करो यतन मन मान जाये, पँच दुष्ट को मार भगाये॥
जो प्रानी हरि गुण गाये, दर्शन सोई परमगत पाये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

करम भूल कूड़ कमांदे, मनमुख चोटां दर दर खांदे।।
गुरमुख राम कबहूँ ना विसारे, मनमुख प्रीत माया धारे।।
संग ना लेते संग ना देते, साकत पँच दुष्ट पिआर।।
रहेओ राम सदा अटल, दर्शन नाम अचल अबिचल।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

काहे रे मन की डगरीआ डोले,

अमृत वेले अनहद शब्द बाबीहा बोले॥

अंधल टेक तुमारी राम जीओ, हम सभ ठहिरे भिखारी॥

सेवक सेव भगत कमाई, तुध ते रामा पाई॥

तूँ दरियाओ तूँ ही बंध, तूँ बंधू तूँ ही भ्राता॥

मन माने हरि नाम सिमर जीओ, गुर शब्द भेद बताई॥

हरि रंग राता पुरख बिधाता,
नानक नाम को विरला जाता।।
साधू संग परमपद पाई,
दर्शन कहत दुख कलेश सभहि नस्स जाई।।

(यकीन)

खतरा

ईमान को नहीं इन्सान को, साधू को नहीं शैतान को।।
बुल को नहीं गुल को, खुदा को नहीं खुद को।।
धरम को नहीं शरम को, सांझ को नहीं भरम को।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

किन कारण तूँ जग में आया मन में सोच विचार,
मेरी मेरी करता रहा तूँ प्रभ को दीआ विसार॥
जिसने दीआ उसने लीआ तूँ किओं भये उदास,
कल तक था जो तेरा अब और किसी के पास॥
जो आया सो चलसी इक दिन, ये कुदरत का खेल,
आपे जोड़े आप विछोड़े आपे बख्शणहार॥
कर ले नाम कमाई बंदे, नाम है मुक्त अधार,
लख चौरासी कट जायेंगे दर्शन होंगे मेहरबान॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

किरपा करो प्रभ किरपाल, हिरदे वसो गोबिंद गोपाल॥
नैनण उडीकां मन चैन ना पावै, बिन तेरे ना रैण विहावे॥
मैं पिआसी तांघ मिलण की तुध बिन जापै घोर अंधिआर॥
तुध संग सोहे सपत शिंगार, बिन तेरे जीउणा धृग संसार॥
देओ प्रीत चरन कमल की दरस तुमारे की पिआस॥
आस लगासां तुध पे साहिबा तुध बिन सुणे कौण पुकार॥
दर्शन दीजो नाथ पिआरे तुमरी ओट तुम पे माण॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

कैसे करूँ तेरी मैं अराधना मोहे गुण नाही रे॥
सांवले रंगीले प्रीतम पिआरे,
चरण प्रीत देहो मोहे प्रितपाले, मैं जाऊँ बलिहारे॥
गुर बिन मुक्त ना पायो कोये,
हरि की भगती गुर संग होये, गुर गिआन बतायो रे॥
दास की आस पूरी कीजै,
हिरदे वास कर चरणों में लीजै, मोहे दर्शन की पिआस रे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(अर्ज़)

चरन प्रीत मोहे दीजै, प्रभ जीओ किरपा कीजै॥
चरन धोये चरनांमत पीवां, मन निरमल हो चरनी थीवां,
ऐसी सुमत्त मोहे दीजै॥
चरन शरन मिले गुरू की सेवा, सहज धुन उपजे गावे गुण जीहवा,
नाम बिना रस फीकै॥
चरन कमल मिले सुख अनंदा, दास पे किरपा कीजै गोबिंदा,
दर्शन नाम रस दीजै॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

(श्लोक)

चिट्टी काली चमड़ी, ना नीले पीले वेस,
सतिगुर सेवा छूटे भरम, ना लागे दूख कलेस॥
तुध बिन तड़फे प्रीतम पिआरी, जिवें चात्रिक बूँद,
गुर किरपा ते मिले गोसईयां, ना मिले मुडायां मूँड॥ (यकीन)

(दोहा)

जिसे देखा सो दुखी हरि नाम संग भयो सभ सुखी,
जिस हरि नाम मन भाये, सो जन मुक्त पाये हरि राय॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

चिंता चित्त ना आवे, जा सतिगुर मन भावे।।
राम नाम देहो मेरे हरि राय, ऊच अपार ठाकुर दातार जीओ।।
पाप खंडन करो मेरे मेहरबाना,
चसा न बिछुड़े मेरे प्रभ दास तुमारा।।
सुणां पढ़ां नित तेरी बाणी, गुर संग निस हरि रंग माणी।।
बैकुंठ बसै मेरा अंतरयामी, भोजन भोज करे अमृत नाम।।
गुर किरपा होसी अगंम गिआन, दर्शन प्रभ पूरे जाऊँ कुरबान।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जित देखूँ मैं तुध पाऊँ, मेरो दो नैनण को आस,
मोहे ना भावे तुध बिन कोये, मन तड़फे दिन रात॥
जनम जनम के पिआसे नैना, राह निहारे तेरी साहिबा,
करूँ बिनओ तुध आगे मैं, थक्क हारी मैं परवरदिगार॥
मन अन्न पाणी किछ नाही भावे, बिन दर्शन मोहे चैन ना आवे,
देओ दरस मेरे राम रघुराई, मुझ होवो प्रभ आप दयाल॥
मन तृप्ते आतमा जागे, तुध किरपा ते सभ दुख भागे,
मैं निमाणी की सुणेओ पुकार, दर्शन दीजो करो नदर निहाल॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

जो जन करे सेवन मदिरा मास, हो जाता तन का नास॥
जीते जी अंदर देही होवे भूतन का वास॥
देही रोगी मन मैला काम क्रोध नाल,
चित ना आवे प्रभ का सिमरन हउमै चलै नाल॥
विशे विकारों में मन डूबै आतमा रहे कुरलाती,
कोई ना सूझे रास्ता नशे की लत ऐसी॥
जैसा खाये अन्न तैसड़ा होवे मन,
दर्शन चख नाम रस सदा रहे सुआद॥ (यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तृष्णा मिटे मेरे मन तन की ऐसा दीजै गिआन,
मुझ में गुण नाही कोये तुम हो गुणी निधान॥
दीन पे दया करो प्रभ दाते,
साजन प्रीतम पुरख बिधाते मेरे सतिगुर मेहरबान॥
तुध बिन दूजा ना मोहे कोये,
नाम सिमर मन शांत होये मेरी बेनंती करो परवान॥
आपे बख्शो सुमत्त रघुराई,
दर्शन प्रीत तुध संग लाई, मोहे बख्शो अमृत नाम॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुझ बिन जिंद जुदाईयां सैहंदी,
तुझ बिन जिंद जग माहि नाही रैहंदी॥
तूँ सुराही तूँ साकी तूँ सतिगुर पुरख बिधाता,
सहज समाये जिंद तुझ बिन जुदाईयां सैहंदी॥
आखां तुध नूँ देओ दान नाम आपणे चेरे,
हम गरीब दुख घनेरे तूँ ठाकुर प्रितपाल हमारे॥
देओ दरस अगंम गोसांई तेरे सांई तेरे सांई तेरे सांई,
तेरे सांई तेरे सांई दर्शन अगंम गोसांई तूँ सभनी थांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुझ बिन प्रेम ना उपजे, मेरे प्रीतम सतिगुर सांई।।
तुझ बिन मन लोचदा हरि राय, तुझ बिन नींद नैनण ना आये।।
तुझ जे मन भावै दर्शन देओ मेरे हरि राय,
तुझे धिआया सभनी थांई पाया हरि राय।। (यकीन)

(दोहा)

तुझ बिन मन लोचदा हरि राय, तुझ बिन नींद नैनण ना आये।।
मेरे मीत सुनेंदड़े रंग रंगीले हरि राय,
बिन तुझ मर जाई, या यकीन मीना जल बिन हरि राय।।
(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तुम मेरे ठाकुर राम रघुराई, तुध बिन नैनण नींद ना आई,
मोरे राम रघुराई॥
मन चैन ना मोहे सुख विहाया तुध बिन मेरे प्रीतम,
सभ दिसन पराया, मोहे राम रघुराई॥
हे रामा सावन आया, मोरे अंगना रिम झिम लाया,
सभ सखीआं मानण रंग रलीआं,
बिन साजन मोहे किछ नहीं भाया, मेरे दर्शन सांई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ जाने तुझ तांही मानै, तुझ बिन मन ना मानै॥
तुझ बिन दुख घनेरे सहणे,
मेरे प्रीतम हर जोबन में सुख सहाये, सतिगुर ठाकुर हरि राय॥
तुझ बिन हरि राय मन लोचदा जिओं चात्रिक बूँद सताये,
तुझ बिन मन माने नाही देओ नदर जे तुझ भाये हरि राय॥
तुझ बिन नैनण ना नींद आये, प्रीतम हरि राय,
देहु नाम ठाकुर पिआरे दर्शन एह मोहे मन भाये॥

कूड़ भयो सगल संसार,
कलि माहि बिन नामे ना उतरे पार हरि राय।।

(यकीन)

(दोहा)

नाम सिमर दुख कट्टे जाण,
कामन कंत संग सुहागण, दर्शन पिर बिन मर जाण।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तूँ मेरे ठाकुर ठाकुर गोसांई, तुध बिन नैनण नींद ना आवे।।
नित्त दिन याद करेसां मेरे साहिबा, तूँ काहे को देर लगाई।।
चारे रुतां बारां माह, मैं तुध बिन सावन त्रिहाई।।
एको आस मन लगासां, कब दरस होंगे गुसांई।।
मैं कामन कंत पिआसी, ना को संग सहाई।।
एक घड़ी मोहे चैन ना आसी, तूँ काहे को देर लगाई।।
मैं को दरद बिरहों होसी, ना को प्रीत पराई।।

नैनण उडीकां हड्डीं रचीआं, तूँ काहे को देर लगाई॥
मैं को तांघ वधदी जासी, इक्क पल खुशी तब होसी॥
दर्शन दयाल भयो मेरे साहिबा, सभहि अलस टुट्ट जाई॥

(यकीन)

(दोहा)

फिरत फिरत दर दरवज्जे, मिलेआ ना मन को चैन,
तेरी बिरहों मारेआ साहिबा, बिन तेरे मेरी किवें बीते रैन॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

तेरे तोल तराजी तों लैके शपथ तलवार दी नोक तक,
तेज धारां आरेआं दीआं, रेतां तत्तीआं पवाईआं तेरी खातिर॥
तेरी सोच दे सदके, उहनां चुम्मीआं सूलीआं,
जिहनां किल्ल कन्नां च ठुकवाये तेरी खातिर॥
तेरे आशिकां दे इश्क अव्वले ने,
ज़हर पिआले पीते तेरे इश्क दी खातिर॥
जिस सांझ नूँ तूँ कदे जगाया सी,
दर्शन ओह उदों दी बुझी ए हुण तक॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दाढीआं रखण केस सजावण, जोरी मंगण दान चढ़ावे खावण।।
पोथीआं पढ़ पढ़ कां रौला पावण,
आप हनेरे उम्मत चानण दिखावण।।
पढ़न नमाज़ां मसीते जावण, अल्ला दुहाई मुरदे खावण।।
तीरथ नहावण उठ मंदरीं जावण, तिलक जंजू पाके हंधे खावण।।
कहे दर्शन सभ भेख पाखंडा, जिस हिरदे वसे परमानंदा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

दीजो दरस माहे मेरे ठाकुर जीओ, मोहे नैनण दरस पिआस॥
नींद ना आवे ना मन चैन माहे,
तुध किरपा धार कंत पिआरे, जोती जोत समाये॥
तुध से बिछुड़े मर जासी, जैसे मीना पाणी पिआसा॥
एको आस दर्शन जीवे, कब दयाल होवोगे गुरदेव गिरवरधारी॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नदर करो मेरे प्रीतम पिआरे, तुध संग नेहा लगाये॥
तड़फस तड़फस रैणा बिताये, बिन बाती दीप बुझ ना जाये॥
हम निरगुण किछु ना जानो पैज राखो मेरे सिरजनहारे॥
किरपा करो मेरे सतिगुर पिआरे, दर्शन तो से बलि बलि जाये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

नित्त निमाणी करे अरजोई, कब दरस होंगे ठाकुर राय।।
अब बैरागण अमंगल भयो, बिरहों तांघ होसी सवाये।।
चैन ना आवे रैण ना विहावे, मन मोह नित्त सतावे।।
दर्शन जन प्रभ मेहर करो, गुर शब्दी लिव लाये।।

(यकीन)

(दोहा)

बिन हरि भजन रंग रस जेते, संत दयाल ये नही सभी झूठे,
नाम रतन पायो जन नानक, नाम विहीन चले सभ झूठे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

प्रभ जीओ मोहे नाम दीजो, तेरे बेअंत भरे भंडार।।
कोट अपराध हम कीनो, तुम हो दाता बख्शणहार।।
ऊच अपार तेरी महिमा, तेरे भगत तेरे सहारे।।
हम पे दया दान कीजो, चरन प्रीत लागी मोहे पिआरे।।
तुम पे आसा तुम पे ओट, तेरे खेल सभ से निआरे।।
दर्शन कहे करो करम गोसांई, अब नाहीं कोई बिना तुमारे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

बलबावन बलराम गुसईयां, राखो प्रभ लाज हमारी।।
प्रेम प्रीत को जानो नाही, ना मोहे दीद तुमारी।।
रैण ना विहावे ना दिनस मोको, तुध बिन तड़फे राम दुलारी।।
जब से बिछुड़े तब से चैन नाही, दर्शन नैण पिआस तुमारी।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

भाई रे काहे रे मन डोले, सतिगुर हिरदे अनहद शब्द,
हरि साजनड़ा बोले॥
बेअंत सुआमी पुरख हमारे, देओ नाम हरि साजन पिआरे॥
मन चित आवे तां बेअंता, मेरा दास दासन दास कहेंदा॥
सच्च सहज हरि साजन हमारे, चरण पड़ूँ तोरे सतिगुर पिआरे॥
देओ दरस मेरे राम दुलारे, मेरे प्रीतम तेरे सहारे॥

हम नीच निचले आसन, तुम हो नानक प्रभ बख्शंदा।।

देओ संतोख नाम प्रभ आपणा, हर दम तुझे धिआई।।

मुक्त भुगत तैह जुगत, तुझ ते है पाई।।

सुख सहज तेरा नाम धिआऊँ, तुझ ते मैं बलि बलि जाऊँ।।

सुणो बेनंती राम राजे दर्शन दरस देओ सतिगुर पिआरे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मन तूँ काहे करे चतुराई,
राम नाम धन पायो नाही, बिरथा उमर गवाई॥
वडभागी मिले गुर के दर्शन,
बिन गुर जोगी दर दर भटकण, गुर बिन गिआन ना भाई॥
गुर के पास नाम भंडार, नामै पायो मुक्त दवार,
होंगे दरस गोसांई॥
साध संगत मन निरमल होये,
कोट जनम की गुरू मैल धोये, दर्शन छूटै जम की फाही॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मनमुख उपजे पँच विकारा, गुरमुख हिरदे वसे दातारा।।
मनमुख दोखी दूख कमावै, गुरमुख नाम शब्द लिव लावै।।
मनमुख मन ना आवे शांत, गुरमुख गुर किरपा पावै एकांत।।
मनमुख होसी प्रीत पराई, गुरमुख सच सच्चा प्रेम रघुराई।।
जन दर्शन दास बण ऐसा, गुरमुख नामे छींबे जैसा।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मनमुख मन होवे परधान, गुरमुख गुर शब्द पछाण।।
मनमुख मोह ममता हंकार, गुरमुख पायो अंतर पिआर।।
मनमुख लागे माया धिआन, गुरमुख पायो गुर सेवा माण।।
मनमुख बहुबिध करे चतुराई, गुरमुख पायो गुर भगत कमाई।।
गुरमुख सदा रहेओ ताण, गुरमुख पे जाऊँ दर्शन कुरबान।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मन में पिआस नित्त सतावे, भुख पिआर दी वधदी जावे।।
नैन मेरे नीर ना विहावे, तुध बिन नैनण नींद ना आवे।।
ना मन मन्ने ना अखां सौण, ना सुपने विच खिआल औण।।
दर्शन जन फिर वी तुमहें ना भुलावे,
तुध बिन नैनण नींद ना आवे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मिट्ठत मीठे मनमोहन पिआरे, तड़पदा मोरा जीआ।।
पाणी अन्न ना भावे मोहे दिन राती,
तुध बिन घड़ी पल ना थीवे।।
नैन नीदड़े प्रीतम बाझों, प्रेम प्रीत पीआ सतावे।।
एक बूँद जिवें चात्रिक मांगे, दर्शन तड़प तड़प मर जावे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मिल मेरे ठाकुर राम रघुराई, दान दीजो नाम गोबिंद गोसांई।।
मोहे नैनण नींद ना आवे, तुध बिन मेरे सतिगुर सांई।।
एको नाम सिमर तुमारा, भवजल पार उतरेओ भाई।।
साध संग दीजो मोहे सुआमी, दर्शन प्रभ आपने बख्शो वडियाई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे पीआ वसे परदेस सखी, इक पल चैन ना आवे॥
करमहीन विछुड़ी कंत करे बेनंती, दान देओ हरि राय॥
मन ना भावे तुध बिन पाणी अन्न, मेरे हरि राय॥
तुध बिन नैनण नींद ना आवे, मेरे हरि राय॥
कामण कंत संग सुहागणीआं, पिर बिन मर जाये हरि राय॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मेरे मीत पतित पावन सुख सागर जीओ,
देओ नाम प्रभ किरपा अपनी धार जीओ॥
पाप खंडन प्रीतम दाते, राख लेओ ठाकुर सुआमी राखनहारे॥
अंत वेले नहीं कोई संग जाये, दर्शन जन नाम बैकुंठ समाये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं सिम्बल दा रुख वे सजणा, उग्ग पेया विच कुराहे,
ना को मेरी छावें बैठे, ना को फल फुल खावे॥
पत्त कुसैले फुल बकेवें ना भौरा झूमण आवे,
लम्म लमेरीआं कूलीआं शाखां ना पंछी आहलणा पावे॥
उच्ची संघणी भरी जवानी ना चम्म कम्म को आवे,
बिरहों दी अग्ग घुट्टी बैठा ना छत्तीं बाले को पावे॥
कार करे ना को लकड़हारा, ना बेदी डोली सजावे,
भाग भरेसी को भागां वाली, दर्शन बाबुल बलमा गल लावे॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं तां जाणा एको दाता, जिस एह उमत्त सजाई॥
ना मैं जाणा हिंदू सिख ना मोमन ईसाई॥
जात पात ते मज़हब कौम एह है सोच पराई॥
पुत्तर कपुत्तर सपुत्तर बनण एह है करम कमाई॥
मनमुख ते मनमती करण बहुत चतुराई॥
धरम नूँ भुल धरने मारण हक्कां खातर करण लड़ाई॥
कहे दर्शन रब्ब ना विसारो जिस एह सांझ जगाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं निमाणी करमहीन, तड़फस दरस तुहारे॥
मन चैन ना सुख नैनण नींद, आस लगासां दयाल होवो,
संत सजन मोको देसा॥
जो तुध भावै मेरे गोबिंद गोसांई, नीचों ऊच करीजै॥
सुण अरदास मिरगावली, अगनी बाहर करीजै॥
नानक नदर करो जन आपने, दर्शन अरजोई सुण लीजै॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं निमाणी करां अरजोई, किरपा निधान प्रभ ठाकुर जीओ।।
तुझ बिन नैनण नींद ना आवे, मेरो राम रहीम।।
करते करीम पुरख बिधाते पिर बिन किवें जीण।।
दयाल होवो जन आपने साधू संग दीजै।।
हरी ओम हरी कर मन मेरे,
दर्शन नीच तेरा कूकर दया मेहर करीजै।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं निमाणी माण करेसां तुध पे मेरे सांई,
ऐसे तड़फां जैसे मीना बिन पाणी मर जाई॥
मेरे साहिबा वांग मिरगावली त्रिहाई,
ताक पराई तात बेगानी दोनो में सुख नाहीं॥
आपणा बीजे आपणा काटे बिन हरि सिओं प्रीत ना भाई॥
सुख संघेड़े हरि संग आपे किसे विरले जाता भाई॥

मैं बावरी ऐसी भयो रूप ना धन नाही,
मेरा सांई सुंदर संघेड़ा हरि सिओं मिलेओ भाई।।
दर्शन पिआसी चेतना नैनी नीर बहाई,
हिरदे वसो मेरे साहिबा अरज सुणो मेरे सांई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मैं मूरख की गत नहीं कोई, सगल जहां में तूँ पुरख सुजाना।।
तुध संग निरमल होवां हउँ पापी को नाही ठिकाणा।।
जनम जनम की बिगड़ी सुलझी गुर दीओ मोहे नाम निधाना।।
नीच कमीना हउँ दुराचारी, दयाल पुरख सद मेहरबाना।।
दर्शन भाग भये वड तेरे, कीआ तुध संग जो दास निमाणे।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

मक्के हज्ज गुजारन मोमन, मनो अभिमान ना जाई॥
काशी मथुरा भटकण हिंदू, करन जुबानी चतुराई॥
हिरदे वसे ना गुरू गोबिंद, फिरन धौण अकड़ाई॥
मत्त पराई मरण अनियाई मौते, शहीदी आखण पाई॥
गुरू ना जाणे मतभेद, सिखावे ना मनुख लड़ाई॥
प्रेम शास्त्र देवण सभहि मनमुख सूझ ना पाई॥
दर्शन दास रहमत मंगे, करो नाथ रघुराई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

रखण रोजे मनावण ईदां, लुटण नित खुदाई।।
करन इश्नान नित्त तीरथीं मनो मैल ना गवाई।।
मुँह दे मिट्ठे दिल दे खोटे बण बैठे रब्ब दे इसाई।।
कुकड़ां वांगूँ चुंझां मारण, पँज कक्केआं लाज लाई।।
आपणे आप आपे पछाणो, भुल जाओ सारी लड़ाई।।
दर्शन दास करे अरजोई, करो दया गोसांई।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

राजे राज कमांवदे जुलम करन दिन रात।।
कुत्तेयां वांगूँ भौकदे जिवें मुरदा खावण काग।।
माया जफीआं पांवदे, बण बैठे काले नाग।।
दरगाहे ढोई ना मिलसी, जगत ना लागे लाज।।
मंदर खाधे बाहमणा, भाईआं गुरूदुआर।।
गिरजे लुट्टे पादरीयां, मसीतां मुसलमान।।
दर्शन लेखा मंगेसी, साहिब दे दरबार।।

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

राम भज मन बावरे जीवन बीता जाये,
पल पल छिन छिन नाम धिआले तूँ काहे वक्त गवाये॥
बचपन बीता आई जवानी रंग रलीआं बहु माणी,
गई जवानी आया बुढ़ापा पर तृष्णा वधदी जाये॥
मन तेरे आगे तूँ मन के पीछे भूल गेओ नाम कमाई,
उसने भेजा शुभ करम कमाने तूँ पाप कमाता जाये॥
इक दिन उड जाणा है पंछी तोड़के सुंदर पिंजरा,
लुट जायेगा सभ किछ तेरा, फिर मिलेगा दर्शन किआ पछताये॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

रामा तुध बिन ना को सहाई,
आन बसो मन माहे तुध संग प्रीत लगाई॥
हम पापी हम निचले आसन, तुम वड्डे मेरे सांई,
मन मैला हो किंन बिध उजवल, ऐसा गुर दो सांई॥
सेव ना कीनी नाम ना जपेओ, बेमुल्ला उमर गवाई,
ऐसी राह दरसावो सुआमी, कट्ट चौरासी जाई॥
दरस पिआसी चेतना दर्शन देखण तांई,
किरपा कीजै दीजै दर्शन मन तृप्त हो जाई॥

(यकीन)

धन नानक
यशवंती निराधार धाम पहला

लोगन की है बात निराली, जब काम परे मुँह भंवाली॥

सोच समझ कर बिचार, गुर बिन नाही पार उतार॥

भली चंगी दुनिया में, अंतिम राम सहाई॥

(यकीन)

धन
नानक

संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक
सचखण्ड नानक धाम (रजि॰)
दरबार महाराज दर्शन दास जी,
बटाला एवं लोनी दरबार
रजि॰ नं॰ S-18257